❀ ओ३म् ❀

संस्कृत-शिक्षा—

तृतीयोभागः ।

पं० जीवारामोपाध्यायप्रणीतः ।

तेनैव
मुरादाबादनगरे
स्वकीये सरस्वतीनाम्नि मुद्रणयन्त्रे
अङ्कयित्वा प्राकाश्यं नीतः ।

Printed and Published by,
Pt. JIWA RAM UPADHYAYA,
AT THE SARASWATI PRESS,
MORADABAD.

दशमावृत्तौ २००० } सन् १९२६ { मूल्यम् ।-)

॥ ओ३म् ॥

संस्कृत—शिक्षा

तृतीयोभागः ।

बलदं सकलं मतिदं विमलं सवितारमजं निगमागमदम् ।
अनघं भगवन्तमनादिगुरुं प्रणिपत्य नमामिनमाम्यहकम् ॥

अइउण् ॥१॥ ऋलृक् ॥२॥ एओङ् ॥३॥ ऐऔच् ॥४॥ हयवरट् ॥५॥ लण् ॥६॥ ञमङणनम् ॥७॥ झभञ् ॥८॥ घढधष् ॥९॥ जबगडदश् ॥१०॥ खफछठथचटतव् ॥११॥ कपय् ॥१२॥ शषसर् ॥१३॥ हल् ॥१४॥

इति प्रत्याहारसूत्राणि ।

(प्रत्याहार के प्रत्येक वर्ण का ज्ञान)

॥१॥ अण्—अ इ उ ॥२॥ अक्—अ इ उ ऋ लृ॥३॥ अच अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ॥४॥अट्—अ इ उ ऋ लृ ए ओ

१-अण् । २-अक्, इक् उक् । ३-एङ् । ४-अच् इच्, एच् ऐच् । ५-अट् । ६-अण्, इण्, यण् । ७-अम्, यम्, ङम् । ८-यञ् । ९-झष्, भष् । १०-अश्, हश्, वश्, बश्, भश्, जश्, । ११-छव्, १२-यय्, मय्, झय्, खय्, चय् । १३-यर्, झर्, खर्, चर्, शर् । १४-अल् हल् वल् रल् झल् शल् इतने प्रत्याहार जानने चाहियें ।

ऐ औ ह य व र ॥५॥ [१]अण्–अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ॥६॥ अम्–अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न ॥ ६ ॥ अश्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥८॥ अल्–अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥९॥ इक्—इ उ ऋ ऌ ॥ १० ॥ इच्—इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ॥११॥ इण्—इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ॥१२॥ उक् उ ऋ ऌ ॥१३॥ एङ्—ए ओ ॥१४॥ एच्—ए ओ ऐ औ ॥१५॥ ऐच्—ऐ औ ॥१६॥ हश्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ १७ ॥ हल्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥१८॥ यण्—य व र ल ॥१९॥ यम्—य व र ल ञ म ङ ण न ॥२०॥ यञ्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ ॥२१॥ यय्–य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥२२॥ यर्–य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ २३ ॥ लश्—ल ञ म

---

१ 'अणुदित सवर्णस्य चाप्रत्ययः'—इस सूत्रमें परले णकार तक अण् प्रत्याहार लिया जाता है अन्यत्र सर्वत्र उरले णकार तक।

ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ २४॥ वल्—व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ २५॥ रल्—र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥२६॥ मय्—म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥२७॥ङम्-ङ ण न ॥२८॥ झष्—झ भ घ ढ ध ॥२९॥ झश्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ ३० ॥ झय्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥३१॥ झर्—झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ ट च त क प श ष स ॥३२॥ झल्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह॥३३॥ भष्-भ घ ढ ध॥३४॥ जश्-ज ब ग ड द ॥३५॥ बश्-ब ग ड द ॥३६॥ खय्-ख फ छ ठ थ च ट त क प॥ ३७॥ खर्-ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥३८॥ छव्-छ ठ थ च ट त॥३९॥ चय्-च ट त क प ॥४०॥ चर्-च ट त क प शष स॥४१॥ शर्-श ष स ॥४२॥ शल्-श ष स ह।

[1]अथाऽच्सन्धिप्रकरणम्।

(१) इकोयणचि ॥६।१।७७॥ इकः स्थाने यण् स्याद्

---

१ दो वर्ण परस्पर निकट होने से मिल जाता है, उनका नाम सन्धि है जिस में स्वरों का मेल होजाता है वह स्वर सन्धि और जिसमें व्यञ्जनों का मेल होता है वह हल् सन्धि कहा जाता है।

चि संहितायां विषये । इक् (इ उ ऋ लृ) के स्थान में यण् (य, व, र, ल) हो अच् परे हो तो सन्धि करने में ' जैसे दधि + आनय = द्–ध्–य्–आनय = दध्यानय । (तू दही ला) मधु + अत्र = म ध् व्-अत्र = मध्वत्र (शहद यहां) । पितृ + अर्चा = पि त् र्–अर्चा = पित्रर्चा (पिताकी पूजा) । लृ + उच्चारणम् = ल्-उच्चारणम् = लुच्चारणम् = ।(लृकारबो-लना) ॥ (२) एचोऽयवायावः ॥६।१।७८॥ एचः क्रमादय अव् आय् आव् इमे स्युरचि । एच् (ए ओ,ऐ औ) प्रत्याहार को क्रम (सिलसिलेवार) से अय्, अव, आय् आव् ये आदेश हों अर्थात् (उन की जगह पर हो जावें) अच् परे हो तो । जैसे–चे + अनम् = च्-अय्–अनम् = चयनम् (इकट्ठा करना) लो + अनम् = ल्-अव्-अनम् = लवनम् (काटना)छेदना ।चै + अकः = च्-आय्-अकः = चायकः,(इक-ट्ठा करने वाला) । लौ + अकः-ल् आव्-अकः = लावकः । (३) अदेङ् गुणः ॥ १ । १ । २ ॥ अत् एङ् च गुणसंज्ञः स्यात् ॥ अत् (अ) और एङ् (ए ओ) गुण संज्ञक हों । अर्थात् इनको गुण कहते हैं (४) आद् गुणः ॥ ६।१।८७ ॥ अवर्णादचि परे पूर्वपरयोरेको गुणादेशः स्यात् । अवर्ण(ह्रस्व दीर्घ प्लुत तीनों प्रकार के अकार) से अच् परे हो तो पूर्व और पर के स्थान में एक गुण (३)आदेशहो जैसे–सुर + इन्द्रः = सुर् एन्द्रः = सुरेन्द्रः (देवराज) गङ्गा उदकम् = गङ्-ओदकम्-गङ्गोदकम् (गङ्गाजल) यहां सुरके रेफ का

अकार और इन्द्र की इ इन दोनों को मिल ए हो गया। गङ्गा के अन्त का आ और उदक का उ इन दोनों को मिल के ओ होगया॥ (५) उरण् रपरः ॥१।१।५१॥ उः स्थानेऽण् प्रसज्यमान एव रपरः प्रवर्त्तते ॥ ऋ के स्थानमें जो अण् वह रपर हुआ ही प्रवर्त्तहो इसमें अण् प्रत्याहार के अक्षरों से परे र दिखलाया है। जैसे कृष्ण–ऋद्धिः = इसमें (४)से गुण हुआ तब 'उरण् रपरः' इस सूत्रसे कृष्णके णकार का अकार और ऋद्धि की ऋ को मिलकर अर् गुण हुआ तब कृष्णर्द्धिः (कृष्णकी वृद्धि) सिद्ध हुआ। एवमेव तव + लृकारः = तव्-अल्-कारः = तवल्कारः (तेरी लृ) (६) लोपः शाकल्यस्य ॥८।३ १९॥ अवर्णपूर्वयोः पदान्तयोर्यवयोर्लोपोवाऽशि परे। अश् परे हो तो अवर्णपूर्वक पदान्त (सुप् और तिङ् जिसके अन्तमें हों)। यकार और वकार का विकल्प से लोप हो। जैसे कवे इह = यहां (२) से कव् अय् + इह = कव-इह। और द्वितीय पक्ष में जहां यकार का लोप नहीं हुआ वहां कवयिह।(हे कवि यहां) प्रभो + आशु = (२) प्रभ्-अव्-आशु = प्रभ आशु। द्वितीय पक्ष में प्रभवाशु। (हे स्वामिन जल्दी) (७) वृद्धिरादैच् ॥ १। १। १॥ आदैच् वृद्धिसंज्ञः स्यात्॥ आ और ऐच् (ऐ औ) की वृद्धि संज्ञा (इस्म) हो ॥ (८) वृद्धिरेचि ॥ ६। १। ८८॥ आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्॥ अवर्ण से अच् (ए, ओ, ऐ औ) परे हो तो पूर्व और परके

स्थान में एक वृद्धि आदेश हो। जैसे—तत्र एकदा=तत्रैकदा (वहां एक समय) गङ्गा ओघः=गङ्गौघः (गङ्गा का वेग) आर्य्य+ऐश्वर्य्यम्= आर्य्यैश्वर्यम् (आर्यों की प्रभुता, इक़बाल)। पण्डित + औदार्य्यम्=पण्डितौदार्य्यम् (पण्डित की उदारता, फ़ैयाजी)। यहां पर तत्र में त्र का अ और एकदा का ए इन दोनों को मिलके ऐ हुई। गङ्गाके अन्त का आ और ओघ का ओ इन दोनो को मिलके औ हुआ। आर्य्य के यकारका अ और ऐश्वर्य्य की ऐ इन दोनों को मिलके ऐ हुई। पण्डितके तकार का अ और औदार्य का औ इन दोनों को मिल कर औ हुआ। (९) उपसर्गाः क्रियायोगे ॥ १ । ४ । ५९॥ प्रादयः क्रियायोगे उपसर्गसंज्ञाः स्युः। प्रादिक क्रिया के योगमें उपसर्गसंज्ञक हों॥ प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर् वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, एते प्रादयः। (१०) उपसर्गादृति धातौ ॥ ६ । १ । ९१ ॥ अवर्णान्तादुपसर्गादृकारादौ धातौ परे वृद्धिरेकादेशः स्यात् ॥ अवर्ण है अन्त में जिसके ऐसे उपसर्ग (९) से ऋकार है आदि में जिस के ऐसा धातु परे होतो पूर्व और परके स्थान में वृद्धि एकादेश हो जैसे-प्र+ऋच्छति= ˎआˎ च्छति प्रार्च्छति। प्र का अ और ऋच्छति की ऋ इन दोनों को मिल के आर् वृद्धि हुई (११) एङि पररूपम् ॥ ६ । १ । ९४ ॥ आदुपसर्गा-

देङादौ धातौ परे पररूपमेकादेशः स्यात् ॥ अवर्णान्त उपसर्ग (९) से एङ् (ए ओ) है आदि में जिसके ऐसा धातु परे हो तो पररूप एकादेश हो जैसे-प्र + एजते = प्रेजते (वह बहुत कांपता है) उप + ओषति = उपोषति (वह बहुत जलता है) यहां पर प्र का अ एजते के ए का ही रूप होगया। अर्थात् उस में जामिला। उप में प का अ ओषति के ओ का ही रूप होगया अर्थात् ओ में जा मिला (१२) अचोऽन्त्यादि टि ॥ १ । १ । ६४ ॥ अचां मध्ये योऽन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टिसंज्ञं स्यात्। अचों के मध्य में जो अन्त का अच् वह है आदि में जिस समुदाय के वह टिसंज्ञक हो। जैसे मनस + ईषा = मनीषा यहां नकार में अकार अन्त का अच् है इससे आगे सकार हल् है उस के सहित अस्‌मात्र की टिसंज्ञा हुई (१३) ओमाङोश्च ६।१।८५॥ ओमि-आङि चात् परे पररूपमेकादेशः स्यात् ॥ अकार से ओम् अथवा आङ् परे होतो पूर्व और परके स्थानमें पररूप एकादेश हो जैसे शिवाय ओम् नमः = शिवायोन्नमः (कल्याणकारी परमात्मा के लिये नमस्कृति)। शिव + आङ + इहि = शिव + एहि (४) शिवेहि। यहां शिवाय के यकार का अकार पररूप ओकार ही होगया। ङ् की इत्संज्ञा होकर लोप होजाता है आ और इहि की इ को गुण होकर ए होता है पश्चात् शिव के वकारका अकार पररूप होजाता है अर्थात् ए का ही रूप होजाता है ॥ (१४) अकः सवर्णे

दीर्घः ॥ ६ । १ ।१००॥ अकः सवर्णेऽचि परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात् । अक् (अ इ उ ऋ ऌ) से सवर्ण अच् परे हो तो पूर्व तथा पर के स्थान में दीर्घ एकादेश हो जैसे—प्रजा+अरिः=प्रजारिः (प्रजा का दुश्मन) कवि +ईशः=कवीशः । (कवियोंका स्वामी) भानु+उदयः= भानूदयः (सूर्य का निकलना) । भ्रातृ + ऋद्धिः= भ्रातृद्धिः (भाई की वृद्धि) । (१५) एङः पदान्तादति ॥ ६।१।१२८॥ पदान्तादेङोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात्। पदान्त एङ् (ए ओ) से अ परे होतो पूर्वरूप एकादेश हो जैसे—नृपतेऽव । (हे राजन ! बचा) यहां ह्रस्व अ को पूर्व-रूप एकार होगया । पूर्वस्वरूप में अकार का "ऽ" यह चिह्न होता है । प्रभो+अलम्=प्रभोऽलम् । (हे स्वामिन् ! बस) (१६) दूराद्धूते च ॥८।२।८४॥ दूरात् सम्बोधने वाक्यस्य टेः प्लुतो वा स्यात् । दूरसे पुकारने में वाक्य की टि (१२) को प्लुत विकल्प से हो । जैसे—अत्रैहि देवदत्त-३! जिस अक्षर के आगे तीन का अक्षर लगा हो उसको प्लुत समझना चाहिए । (१७) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ॥ ६।१।१२४ ॥ एतेऽचि प्रकृत्या स्युः । प्लुतसंज्ञक और प्रगृह्य संज्ञक अच् परे हो तो नित्य प्रकृति से ! (ज्यों के त्यों) बने रहैं । जैसे आगच्छ चैत्र ३ अत्र(हे चैत्र यहां आ) यहां चैत्र ३ वाक्य की टि को प्लुत होनेसे (१४) से सन्धि नहीं हुआ (१८) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥ १ । १ । ११ ॥

इदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यसंज्ञं स्यात् । ईदन्त ऊदन्त और एदन्त जो द्विवचनान्त शब्द रूप वह प्रगृह्य (७) संज्ञक हो जैसे कवी + इमौ = कवीइमौ । साधू + एतौ = साधू एतौ । सुते + इमे = सुते इमे । यहाँ पर प्रगृह्यसंज्ञा होने से (१४) कवी इमौ में सन्धि नहीं हुआ । (१९) अदसो मात्॥१।१।१२॥ अस्मात् परावीदूतौ प्रगृह्यौ स्याताम् ॥ अदस् शब्द के मकार से परे ईदन्त और ऊदन्त शब्द प्रगृह्यसंज्ञक हों जैसे–अमी + ईश्वराः = अमी ईश्वराः (ये मालिक) अमू + आर्य्यौ = अमू आर्य्यौ (वे दोनों आर्य हैं) प्रगृह्य संज्ञा होजाने से(१४) (१)से सन्धिकार्य नहीं हुआ॥ (२०) ओत् ॥ १ । १ । १५ ॥ ओदन्तो निपातः प्रगृह्यः स्यात् ॥ ओदन्त जो निपात वह प्रगृह्य संज्ञक हो । जैसे अहो + आश्चर्य्यम् = अहो आश्चर्य्यम् (अहो अचम्भे की बात है) प्रगृह्य संज्ञा होने से (२)से सन्धि नहीं हुआ । (२१) अचो रहाभ्यां द्वे ॥ ८ । ४ । ४५ ॥ अच उत्तरौ यौ रेफहकारौ ताभ्यामुत्तरस्य यरो द्वे वा स्याताम् ॥ अच से परे जो रेफ हकार और रेफ हकार से परे जो यर उसको विकल्पसे द्वित्व (दो) हो जैसे वारि + अमलम् = वा र् य् – अमलम् (५) वार्य्यमलम् । (साफ़ पानी) द्वितीय पक्ष में जहां द्वित्व न हुआ वहां वार्यमलम् ।एवमेव + गौरी औ = गौर्य्यौ अथवा । गौर्यौ यहां रेफ से परे यकार को विकल्प से द्वित्व हुआ है (२२) ऋत्यकः॥ १ । १ । १२७ ॥ ऋति परे पदान्ता

अकः प्राग्वद् वा ॥ ऋकार परे हो तो पदान्त अक् को विकल्प से ह्रस्वादेश हो। जैसे--ब्रह्मा ऋषिः = ब्रह्मऋषिः। द्वितीय पक्षमें (४) (५) सू० से ब्रह्मर्षिः (वेद के अर्थ को जानने वाला)।

इत्यच्सन्धिः ।

अथ हल्सन्धिः ॥

(२३) स्तोः श्चुना श्चुः ॥८।४।३९॥ सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्याताम् ॥ सकार और तवर्ग (त थ द ध न) को शकार और चवर्ग (च छ ज झ ञ) के योग (मेल) में शकार और चवर्गादेश हो। जैसे बालस + शेते = बालश्शेते(बालक सोताहै) बालस् + चिनोति बालश्चिनोति (लड़का इकट्ठा करता है) सत्-चित् = सच्चित् (आत्मा)। जगत् × जीवनम् = जगज्जीवनम् (संसार में जीना) शार्ङ्गिन् = जय = शार्ङ्गिञ्जय (हे धनुषधारी ! तू जीत (२४) शात् ॥ ८। ४।४३ ॥ शात् परस्य तवर्गस्य श्चुत्वं न स्यात् शकार से परे तवर्ग का योग हो तो तवर्ग को चवर्गादेश न हो। जैसे विश् + नः = विश्नः (घुसना)। प्रश् + नः = प्रश्नः (पूँछना)॥ (२५) ष्टुना ष्टुः ८।४।४०॥ स्तोः ष्टुना योगे ष्टुः स्यात् ॥ सकार और तवर्ग को षकार और टवर्ग के योग में षकार और टवर्ग (ट ठ ड ढ ण) आदेश हो। जैसे बालस् + षष्ठः = बालष्षष्ठः (छठा बालक) बालस् टीकते

बालष्टीकृते । [बालक जाता है] । पेष् + ता = पेष्टा [पीसने वाला] तत् + टीक = तट्टीका [उसका तिलक] चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिणढौकसे [अयि चक्रिधारी, हथियार वाला तू जाता है] ॥ [२६] न पदान्ताट्टोरनाम् ॥ ८।४।१। पदान्ता-ट्टवर्गात्परस्याऽनामः स्तोः ष्टुर्न स्यात् । पदान्तटवर्ग से परे नाम शब्द के नकार को छोड़कर सकार और तवर्गको षकार और टवर्गादेश न हो। जैसे–षट् + सन्तः = षट्सन्तः । (छः होते हुए) षट् + ते = षट् ते [वे छः] ॥ [२७] तोःषि॥८।४।४२। तवर्गस्य षकारे परे न ष्टुत्वम् ॥ षकार परे हो तो तवर्गको षकार और टवर्गादेश न हो । जैसे सन् षष्ठः [छटा होता हुआ)॥ यहांपर [२५]से नकार को णकार नहीं हुआ (२८) झलां जशोऽन्ते ॥८ । २ । ३९ ॥ पदान्ते झलां जशः स्युः । पदान्तमें झल के स्थानमें जश आदेश हो। जैसे वाक् + ईशः वागीशः [वाणीका स्वामी] [२९] यरोऽनुनासिकेऽनुनासि-को वा॥८।४।४४॥ यरः पदान्तस्याऽनुनासिके परे अनुनासिको वा स्यात् । पदान्त यर् से अनुनासिक (ङ् ञ ण् न म्) परे हो तो यर् को विकल्प से अनुनासिकादेश हो । जैसे–एतत् मतम् = एतन्मतम् (यह माना) जब अनुनासिक न हुआ तब एतद्मतम् । (२८)से दकार हुआ ।(३०) तोर्लि ॥८।४।६०॥ तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णादेशः स्यात् ॥ तवर्ग से लकार परे हो तो परसवर्णादेश हो जैसे बृहत् ललाटम् = बृह-ल्ललाटम् (बड़ामाथा) विद्वान् = लिखति = विद्वाँल्लिखति

(विद्वान् लिखता है) ॥ (३१) खरि च ॥८।४।४॥ खरि झलां चरः स्युः ॥ खर् परे हो तो झलों को चर आदेश हो। जैसे-भेद् + तव्यम् = भेत्तव्यम् = (फाड़ना चाहिये)॥(३२) झयोहोऽन्यतरस्याम् ॥८।४।६१॥ झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः । झय् से परे हकार को पूर्वसवर्णादेश विकल्प से हो । जैसे-बृहत् + होमः = बृहद्धोमः (बड़ा हवन) द्वितीय पक्ष में (२८) से बृहद् होमः । (३३) शश्छोऽटि ८।४।६१॥ झयः परस्य शस्य छो वाऽटि । झय् से परे शकार को छकार विकल्प से हो अट् परे हो तो । जैसे-परिक्षित् शासनम् = परिक्षिच् (२३) शासनम् = परिक्षिच्छासनम् (परिक्षित् की आज्ञा) (३४) मोऽनुस्वारः ॥८।३।२३॥ मान्तस्य पदस्याऽनुस्वारो हलि ॥ हल् परे हो तो पदान्तमकार को अनुस्वार हो। जैसे-गृहम् + याति = गृहं याति (घर को जाता है) ॥ (३५) नश्चाऽपदान्तस्य झलि ॥८।३।२४॥ नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः । झल् परे हो तो अपदान्तनकार और मकार को अनुस्वारादेश हो । जैसे-यशान् + सि = यशांसि (कीर्ति) अधिजिगाम् + सते = अधिजिगांसते (वह पढ़ना चाहता है) ॥ [३६] अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः॥८।४।५८॥यय् प्रत्याहारपरे हो तो अनुस्वार को परसवर्णादेश हो । जैसे-शाम् तः = शां (३५) तः = शान्तः(शान्ति वाला) (३७) वा पदान्तस्य॥८।४।५९॥ पदान्तस्य अनुस्वारस्य ययि परे परसवर्णो वा स्यात् । यय्

प्रत्याहार परे हो तो पदान्त अनुस्वार को विकल्प से पर-सवर्णादेश हो। जैसे त्वम्+करोषि=त्वं (३४) करोषि=त्वङ्करोषि। द्वितीय पक्ष में त्वं करोषि (तू करता है)।

इति हल् सन्धिः।

अथ विसर्गसन्धिः।

(३८) खरवसानयोर्विसर्जनीयः ॥ ८।३।१५ ॥ खरि अवसाने च पदान्तस्य रस्य विसर्गः। खर् प्रत्याहार परे हो अथवा अवसान में पदान्त रेफको विसर्ग हो। जैसे-वृक्षस्=छादयति वृक्षरु(४१) छादयति। वृक्षः (३८) छादयति =वृक्षस्(३९) छादयति=वृक्षश्छादयति(२३) (तरु ढांकता है) ॥ (३९) विसर्जनीयस्य सः ॥८।३।३३॥ विसर्जनीयस्य स स्यात् खरि परे। खर् परे होतो विसर्जनीय को सकारादेश हो। जैसे बालः+तरति=बालस्तरति(लड़का तैरताहै)॥ (४०)वा शरि॥८।३।३६॥शरि परे विसर्गस्य विसर्गो वा॥शर् प्रत्याहार परे हो तो विसर्गको विकल्पसे विसर्गहो। जैसे-बालस्+शेते=बालःशेते पक्ष में बालस्शेते=बालश्शेते (वह लड़का सोता है)। (४१) ससजुषो रुः ॥८।३।६६॥ पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात्॥ पदान्तसकार और सजुष्शब्दके सकार को रु (र्) आदेश हो। जैसे शिवस्+अर्च्यः=शिव

रु=अर्च्यः=(४२) अतोरोरप्लुतादप्लुते ॥ ६।१।११३ ॥
अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेऽति। ह्रस्व अकार से परे रु को उकारादेश हो ह्रस्व अकार परे हो तो। जैसे (४१) शिव-रु-अर्च्यः। इस अवस्था में वकार के अन्तर्गत अप्लुत अकार से परे रु है और रु से आगे अर्च्य का अप्लुत अकार है अतएव रु के स्थान में 'उ' हुआ तब शिव उ अर्च्यः(४) से शिवोअर्च्यः (१५) से शिवोऽर्च्यः (ईश्वर पूजनीय है) ॥ (४३) हशि च ॥६।१।१४॥ अप्लुतात् अतः परस्य रोः उः स्याद् हशि परे। अप्लुत अ से परे रु को उकारादेश हो हश् प्रत्याहार परे हो तो। जैसे-शिवस्+वन्द्यः इस में प्रथम सकार के स्थान में (४१) से रु हुआ तब 'शिवरु-वन्द्यः' शिव शब्द के वकार में जो अकार है वह अप्लुत है इससे परे रु है और रु से परे वन्द्य का वकार हश प्रत्याहार में है तब रु के स्थान में उ हुआ शिव-उ वन्द्यः=(४)से शिवो-वन्द्यः (ईश्वर वन्दना करने के योग्य है) ॥ (४४) भोभगो-अघो अपूर्वस्य योऽशि ॥८।३।१३॥ एतत् पूर्वस्यरोर्यादेशो-ऽशि॥अश् परे होतो भोस् भगोस् अघोस् तथा अवर्ण है पूर्व जिसके ऐसे रु के रेफ को यकारादेश हो। जैसे-भोस् आग-च्छ (४१) भोरु-आगच्छ भो य् आगच्छ। ओतो गार्ग्यस्य ॥८।३।२०॥ओकारसे परे यकार का लोप हो। भो आगच्छ (हे आ) (४५) हलि सर्वेषाम् ॥८।३।२२॥ भोभगोअघोअ-पूर्वस्य यस्य लोपः स्याद्धलि ॥ हल् प्रत्याहार परे हो तो

सर्ववैयाकरणों के मत में भो भगो अघो और अवर्ण पूर्वक यकार का लोप हो। जैसे-भोय् भृत्य! भो भृत्य! (४१)(४४) (हे नौकर) एवमेव भगोस् नमस्ते भगो नमस्ते (हे ऐश्वर्यवान तेरे लिये प्रणाम है) ऐसे ही अघोस् याहि=अघो याहि ! (रे तू आ)। बालास् यत्र (४१) बाला रु-यत्र=(४४) बाला यत्र (लड़के जहां) (४६) रो रि ॥८।३।१४॥ रेफस्य रेफे परे लोपः॥ रेफ (र) से रेफ परे हो तो पूर्व रेफ का लोप हो। जैसे-पुनर् रमते=पुन रमते (४७) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ॥६।३।१११॥ ढरेफयोर्लोपनिमित्तयोः पूर्वस्याणो दीर्घः॥ लोपनिमित्तक ढ और रेफ परे हो तो पूर्व अण् को दीर्घ हो जैसे (४६) से पुन-रमते=पुनारमते (फिर खेलता है) एवमेव पतिस् रम्यः=पति रु (४१) रम्यः= पति (४६) रम्यः होकर (४७) से दीर्घ होकर पतीरम्यः (सुन्दर स्वामी) एवमेव भानुस्-राजते=भानु रु (४१) राजते=भानु (४६) राजते=भानू (४७) राजते (सूर्य चमकता है)।

इति विसर्गसन्धिः।

—०—

अथ सुबन्तप्रकरणम् ।

(सर्वादि) प्रोनाउन ।

सर्व १ (सब) विश्व २ (सम्पूर्ण) उभ ३ (दो) उभय ४ दो अवयव विशेष) डतर और डतम यह प्रत्यय हैं ये प्रत्यय जिनके अन्त में होते हैं वे शब्द लिये जाते हैं जैसे कतर ५ (दो में से कौन) कतम ६ (सब में से कौनसा) अन्य ७ (दूसरा) अन्यतर ८ (दो में से एक) इतर ९ (दूसरा) त्वत् १० त्व ११ (दूसरा) नेम १२ (आधा) सम १३ सिम १४ (सब) पूर्व १५ (पहिला)पर १६ (अगला) अवर १७ (अन्त का) दक्षिण १८ (दाहिना) उत्तर १९ (बायां) अपर २० (द्वितीया) अधर २१ (नीचे) स्व २२ (अपना) अन्तर २३ (बीच)त्यद् २४ तद् २५ (वह) यद् २६ (जो) एतद् २७ इदम् २८ (यह) अदस् २९ (वह) एक ३० (एक) द्वि ३१ (दो) युष्मद् ३२ (तुम) अस्मद् ३३ (हम) भवतु ३४ (आप) किम् ३५ (कौन) ।

इति सर्वादि ।

—०—

पुल्लिङ्ग अकारान्त सर्वशब्दः ।

सर्वः, सर्वौ, सर्वे १ । सर्वम् , सर्वौ,सर्वान् २। सर्वेण सर्वाभ्याम् , सर्वैः ३ । सर्वस्मै, सर्वाभ्याम् , सर्वेभ्यः ४ । सर्वस्मात् , सर्वाभ्याम् , सर्वेभ्यः ५ । सर्वस्य, सर्वयोः,सर्वे-

षाम् ६। सर्वस्मिन्, सर्वयोः, सर्वेषु ७। हे सर्व! हे सर्वौ! हे सर्वे!।८ इसीप्रकार विश्व, अन्य, अन्यतर, इतर,कतर, कतम, सम, सिम, नेम और एक शब्द के रूप होते हैं।

(उभशब्दः) यह शब्द द्विवचन में आता है। उभौ १,२। उभाभ्याम् ३,४,५। उभयोः ६,७। (उभयशब्दः) इसमें द्विवचन नहीं होता। उभयः, उभये १। उभयम्, उभयान् २। उभयेन, उभयैः ३। उभयस्मै, उभयेभ्यः ४। उभयस्मात्, उभयेभ्यः ५। उभयस्य, उभयेषाम् ६। उभयस्मिन्, उभयेषु ७। हे उभय! हे उभये! ८। पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर इन शब्दों के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन पञ्चमी तथा सप्तमी के एकवचन में भेद है। जैसे-पूर्वाः, पूर्वे १। पूर्वात्, पूर्वस्मात् ५। पूर्वस्मिन्, पूर्वे ७। शेष रूप सर्व के तुल्य होते हैं। प्रथम=पहिला। चरम=पिछला। द्वितीय=दूसरा। तृतीय=तीसरा। अल्प=थोड़ा। अर्ध=आधा। कतिपय =कुछ। उक्त प्रथमादि शब्दों के बहुवचन में भेद है। जैसे-प्रथमाः, प्रथमे। शेष विभक्तियों के रूप बालक के समान होते हैं॥ द्वितीय और तृतीय शब्दोंके चतुर्थी पञ्चमी तथा सप्तमी विभक्ति के एकवचन में दो २ रूप होते हैं। जैसे-द्वितीयस्मै, द्वितीयाय ४। द्वितीयस्मात्, द्वितीयात् ५। द्वितीयस्मिन्, द्वितीये ७। तृतीयस्मै, तृतीयाय ४। तृतीयस्मात्, तृतीयात् ५। तृतीयस्मिन्, तृतीये ७।

शेष रूप बालक के समान होते हैं ।

प्रकाशः = रोशनी । पङ्कजः = कमल । वैयात्यम् = बेशर्मी । उपयोगः = इस्तेमाल । भारः = बोझा । निवासः = रहना । प्रतिबन्धः = रुकावट । प्रथितः = मशहूर । निहितम् = रक्खा हुआ । परस्परम् = आपस में । दुर्विनीतः = अशिक्षित, बेतमीज़ । युगलम् = जोड़ा । सम्पर्कः = मेल । प्रतिक्षणम् = हर वक्त । पर्यवसानम् = अन्त । कारागारः = जेलख़ाना । कर्त्तनम् = काटना । अर्ज्जनम् = इकट्ठा करना । पिण्डीशूरः = खाने में बहादुर । खर्ज्जनम् = खुजलाना । पिञ्जरम् = पिंजरा । मार्जनम् = शुद्ध करना । भर्जनम् = भूनना, भूंजना । विमर्दः = व्याघात, धक्कमधक्का । कुपथः = बुरा रास्ता । मर्दनम् = रगड़ना । रञ्जनम् = रङ्गना ।

(निर्जर शब्दः) जो बुड्ढा न हो देवता ।

निर्जरः, निर्जरौ, निर्जरसौ, निर्जराः, निर्जरसः १ । निर्जरम् निर्जरसम्, निर्जरौ निर्जरसौ, निर्जरान्, निर्जरसः २ निर्जरेण निर्जरसा, निर्जराभ्याम्, निर्जरैः ३ । निर्जराय निर्जरसे, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः ४ । निर्जरात्, निर्जरसः, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः ५ । निर्जरस्य निर्जरस निर्जरयोः निर्जरसोः, निर्जराणाम्, निर्जरसाम् ६ । निर्ज निर्जरसि, निर्जरयोः, निर्जरसोः निर्जरेषु ७ । हे निर्जर हे निर्जरौ ! हे निर्जरसौ !, हे निर्जराः ! हे निर्जरसः ८

(पु० आकारान्त विश्वपा शब्दः) ईश्वर ।

विश्वपाः, विश्वपौ, विश्वपाः १ । विश्वपाम्, विश्वपौ, विश्वपः २ । विश्वपा, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभिः ३ । विश्वपे, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः ४ । विश्वपः, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः ५ । विश्वपः, विश्वपोः, विश्वपाम् ६ । विश्वपि, विश्वपोः, विश्वपासु ७ । हे विश्वपाः! हे विश्वपौ ! हे विश्वपाः ! ८ । इसीप्रकार निधिपा (कोषाध्यक्ष) गोपा (ग्वाला) शङ्खध्मा (शंख बजाने वाला) आदि क्विप प्रत्ययान्त समस्त आकारान्त शब्दों के रूप होते हैं ।

भाषा बनाओ ।

धर्मस्य प्रकाशाय विद्यां पठामि । अत्र पङ्कजस्योपयोगस्याऽऽवश्यकता नाऽस्ति । ते भारं तत्र कथं नयन्ति । अस्माकमत्र निवासे प्रतिबन्धोऽस्ति । भवन्तः शाटानां कर्त्तने प्रथिताः सन्ति । कस्य पुस्तकानि निहितानि सन्ति । परस्परं यूयं विमर्दं कथमकार्ष्ट । खलस्य सम्पर्कः प्रतिक्षणं दुःखदो भवति । विश्वपि ते विश्वासो नास्ति । यूयं दुर्विनीताःस्थ अतो न वच्मि । सर्वः सर्वं न जानाति । सर्वान् नमामि पण्डितान् । भवदेवगजो न महेन्द्रगजो । पुत्रो न पुत्री किमस्ति अन्यत् ?।

संस्कृत बनाओ ।

आपके व्याख्यान का कभी अन्त भी होगा । इस शहर के जेलखाने में कितने बन्दी हैं । पापों का इकट्ठा

करना अच्छा न होगा। घर का शुद्ध करना सदा अच्छा है। ईश्वर में उसका विश्वास नहीं है । इस खज़ाञ्ची के पास कितने रुपये हैं। किस हकीम का इलाज होता है? विद्याधर वैद्यराज का।

(हाहा शब्दः) शोक की आवाज़ ।

हाहाः, हाहौ, हाहाः १। हाहाम्, हाहौ, हाहान् २। हाहा, हाहाभ्याम्, हाहाभिः ३। हाहै, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः ४। हाहाः, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः ५। हाहाः, हाहोः, हाहाम् ६। हाहे, हाहोः, हाहासु ७। स० हे हाहाः! हे हाहौ! हे हाहाः!।

(ह्रस्व इकारान्त असि शब्दः) तलवार ।

असिः, असी, असयः १। असिम्, असी, असीन् २। असिना, असिभ्याम्, असिभिः ३। असये, असिभ्याम्, असिभ्यः ४। असेः असिभ्याम्, असिभ्यः ५। असेः, अस्योः, असीनाम् ६। असौ, अस्योः, असिषु ७। स० हे असे! हे असी! हे असयः!॥ इसीप्रकार ग्रन्थि (गाँठ) तिथि (तारीख़) निधि (ख़ज़ाना) विधि (तरकीब) आधि (मन की पीड़ा) व्याधि (बीमारी) उपाधि (पदवी) पयोधि (समुद्र) प्रणिधि (दूत) सन्धि (मेल) अग्नि (आग) अहि (साँप) कवि (शायर) यति (संन्यासी) पाणि (हाथ) छति (छत) दुर्मति (बेवकूफ़) गि

(पहाड़) राशि (समूह) प्रतिनिधि (एवज़ी) रवि (सूर्य) इकारान्त समस्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ।

(उकारान्त वायु शब्दः) हवा ।

वायुः, वायू , वायवः १ । वायुम् , वायू, वायून् २ । वायुना, वायुभ्याम् , वायुभिः ३ । वायवे, वायुभ्याम् , वायुभ्यः ४ । वायोः, वायुभ्याम् . वायुभ्यः ५ । वायोः, वाय्वोः, वायूनाम् ६ । वायौ, वाय्वोः, वायुषु ७ । स० हे वायो ! हे वायू ! हे वायवः ! इसी प्रकार–मन्यु (क्रोध) पशु (ढोर) उरु (जङ्घा) प्रभु (स्वामी) पटु (चतुर) वटु (बालक) चटु (प्यारा वचन) तन्तु (धागा) तर्कु (तकला, तकुआ) धातु (मस्दर) पङ्गु (लङ्गड़ा) पिचु (कपास) बन्धु) भाई) बाहु (भुजा) भविष्णु (होनहार) भीरु (डरपोक) मृत्यु (मौत) परमाणु (ज़र्रा) चाटुचटु (खुशामदी) असु (प्राण) आखु (चूहा) इषु (बाण) क्रतु (यज्ञ) रिपु (दुश्मन) सूनु (लड़का) चरिष्णु (चालाक) ऋतु (मौसम) उकारान्त समस्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं ।

(सखि शब्दः) मित्र ।

सखा, सखायौ, सखायः १ । सखायम् , सखायौ, सखीन् २ । सख्या, सखिभ्याम् , सखिभिः ३ । सख्ये, सखिभ्याम् , सखिभ्यः ४। सख्युः, सखिभ्याम् , सखिभ्यः।

५। सख्युः सख्योः सखीनाम् ६ । सख्यौ, सख्योः, खिषु ७। स० हे सखे ! हे सखायौ, हे सखायः ।

(पतिशब्दः) मालिक ।

पतिः, पती, पतयः १ । पतिम् , पती पतीन् २ । पत्या, पतिभ्याम् , पतिभिः३ । पत्ये, पतिभ्याम् , पतिभ्यः ४ ।पत्युः, पतिभ्याम् , पतिभ्यः ५ । पत्युः, पत्योः,पतीनाम् ६ । पत्यौ, पत्योः, पतिषु ७ । स० हे पते ! हे पती ! हे पतयः ! ॥

भाषा बनाओ ।

प्रभो ! पङ्गुरयं क्रतुं कर्त्तुं वाञ्छति । पटो ! वटोरिदं शकटं भविष्यति । अस्य शाटस्य तन्तवो वरं न सन्ति । मम बाह्वोर्बलं भविष्यति तर्हि द्रक्ष्यामि । चाटुचटोर्वचनानि नो मन्यामहे । अयं तर्कुः कीदृशोऽस्ति । कस्य धातोरिदं रूपं भवति। तत्रत्यानां भीरूणां सूनूनामियं वार्त्ताऽस्ति । मृत्योर्बलं भवत्सु के जानन्ति । अस्माकमयमसिः सर्वेष्वसिषु वरमस्ति । रविरस्तं याति । पङ्क्तवो भवन्ति । यूयं तस्य रिपवःस्थ ?

संस्कृत बनाओ ।

ख़ज़ाने में इस समय कितना रुपया है । यह पदवी आप के लिये किस चतुर आदमी ने दी है ? समुद्र में डरपोक आदमी कब जाते हैं ? ऐसे काम बेवक़ूफ़ लड़कों के होते हैं। इस मकान की छत पर क्या कोई मनुष्य रहते हैं ? पहाड़ में जाकर आपने क्या २ देखा ? । उन लड़कों के हाथों में कौन २ पुस्तक हैं । मैं नहीं जानता हूँ कौन २ पुस्तकें हैं

(बहुवचनान्त *कति शब्दः) कितने।

कति १, कति २, कतिभिः ३, कतिभ्यः ४, कतिभ्यः ५, कतीनाम् ६, कतिषु ७।

(बहुवचनान्त त्रिशब्दः) तीन !

त्रयः १, त्रीन् २, त्रिभिः ३, त्रिभ्यः ४, त्रिभ्यः ५, त्रयाणाम् ६, त्रिषु ७।

(द्विवचनान्त द्विशब्दः) दो।

द्वौ १, द्वौ २, द्वाभ्याम् ३, ४, ५, द्वयोः ६, ७।

(ईकारान्त पपीशब्दः) सूर्य।

पपीः, पप्यौ, पप्यः १। पपीम्, पप्यौ, पपीन् २। पप्या, पपीभ्याम्, पपीभिः ३। पप्ये, पपीभ्याम्, पपीभ्यः ४। पप्यः, पपीभ्याम्, पपीभ्यः ५। पप्यः, पप्योः, पप्याम् ६। पपी, पप्योः, पपीषु ७। स० हे पपीः ! हे पप्यौ ! हे पप्यः !

कुविन्दः=जुलाहा। नेजकः=रजकः=धोबी। सन्दर्भः=रचनम्=बनाना। जठरम्=पेट। संरम्भः=कोप, गुस्सा। समासः=संक्षेप, मुख्तसिर। व्यासः=विस्तार, फैलाव। वैषम्यम्=विरोध। कोविदारः=कचनाल। गताक्षरः=मूर्ख पेचकः=उलूकः,उल्लू। परिवादः=असूया, निन्दा। अलीकम्=मृषा, झूठ। प्रतीकारः=प्रायश्चित्तम्, उपाय। प्रणयः=स्नेह। आयासः=परिश्रम। प्रयासः=प्रयत्न। अना-

* इसके तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं।

यासः = विनापरिश्रम । नैयायिकः = न्याय को जानने वाला । वैयाकरणः = व्याकरण को जानने वाला ।

(बहुश्रेयसी शब्दः)

बहुश्रेयसी, बहुश्रेयस्यौ, बहुश्रेयस्यः १ । बहुश्रेयसीम्, बहुश्रेयस्यौ, बहुश्रेयसीन् २ । बहुश्रेयस्या, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभिः ३ । बहुश्रेयस्यै, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभ्यः ४ । बहुश्रेयस्याः, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभ्यः ५ । बहुश्रेयस्याः, बहुश्रेयस्योः, बहुश्रेयसीनाम् ६ । बहुश्रेयस्याम्, बहुश्रेयस्योः, बहुश्रेयसीषु ७ । स० हे बहुश्रेयसि ! हे बहुश्रेयस्यौ, हे बहुश्रेयस्यः । इसीप्रकार अतिलक्ष्मीः शब्द के रूप होते हैं, परन्तु प्रथमा में अतिलक्ष्मीः रूप होता है ।

संस्कृत बनाओ ।

आप जानते हैं सूर्य कितने हैं ? जी जानता हूँ बहुत हैं । यहाँ के जुलाहों का काम कैसा है ? आपका धोबी कपड़ों को कब देगा, क्योंकि हमको शीघ्र ही आवश्यकता है । इस किताब की रचना कैसी होगी यह मैं जानना चाहता हूँ । गुस्से से आपस में विरोध होता है अतएव आप ऐसा न करें । तुम हमारी निन्दा क्यों करते हो । इसका मैं क्या उपाय करूँ । इस पेड़ पर दो उल्लू रहते हैं । इसका क्या उपाय है ?

भाषा बनाओ ।

अहं समासेन वदिष्यामि न तु व्यासेन । आर्त्तेयं गताक्षराणामस्त्यतो वयं न श्रोष्यामः । अयं पेचकः साधूनां सदा परिवादं करोत्यतोऽस्य भेषजमस्माभिः कर्त्तव्यम् । तेषां पङ्गूनां वचनान्यलीकानि न च सत्यानि । भवतामायासस्य प्रणयस्य च ते श्लाघामकार्षुः । कतीनां मनुष्याणामत्र भोजनं भविष्यति । द्वयोरथवा त्रयाणाम् ? युष्माकं विचारे वैषम्यं प्रतिभाति न वा ?

(प्रधी शब्दः) महाबुद्धिमान् ।

प्रधीः, प्रध्यौ, प्रध्यः १ । प्रध्यम्, प्रध्यौ, प्रध्यः २ । प्रध्या, प्रधीभ्याम्, प्रधीभिः ३ । प्रध्ये, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः ४ । प्रध्यः, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः ५ । प्रध्यः, प्रध्योः, प्रध्याम् ६ । प्रध्यि, प्रध्योः, प्रधीषु ७ । स० हे प्रधीः !, हे प्रध्यौ !, हे प्रध्यः ! इसीप्रकार ग्रामणी (गाँव का मालिक) सेनानी (फ़ौज का अफ़सर) के रूप होते हैं, परन्तु सप्तमी के एकवचन में भेद है जैसे—ग्रामण्याम् । सेनान्याम् ।

(नी शब्दः) लेजानेवाला ।

नीः, नियौ, नियः १ । नियम्, नियौ, नियः २ । निया, नीभ्याम्, नीभिः ३ । निये, नीभ्याम्, नीभ्यः ४ । नियः, नीभ्याम्, नीभ्यः ५ । नियः, नियोः, नियाम् ६ । नियाम् नियोः, नीषु ७ । स० हे नीः !, हे नियौ, हे नियः ॥

(सुश्री शब्दः) श्रेष्ठ शोभायुक्त ।

सुश्रीः, सुश्रियौ, सुश्रियः १ । सुश्रियम्, सुश्रियौ, सुश्रियः २ । सुश्रिया, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभिः ३ । सुश्रिय, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः४। सुश्रियः, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः५। सुश्रियः, सुश्रियोः, सुश्रियाम् ६ । सुश्रियि, सुश्रियोः, सुश्रीषु ७। स० हे सुश्रीः! हे सुश्रियौ! हे सुश्रियः! । इसीप्रकार यवक्री (जौ खरीदने वाला) शुद्धधी (पवित्र बुद्धि वाला) सुधी (अच्छी बुद्धि वाला) शब्दों के रूप होते हैं ।

(सुखी शब्दः) सुख की इच्छा करने वाला ।

सुखीः, सुख्यौ, सुख्यः १ । सुख्यम्, सुख्यौ, सुख्यः२ । सुख्या, सुखीभ्याम्, सुखीभिः ३ । सुख्ये, सखीभ्याम, सुखीभ्यः ४ । सुख्युः, सखीभ्याम् सुखीभ्यः ५ । सुख्युः, सुख्योः, सुख्याम् ६ । सुख्यि, सुख्योः, सुखीषु ७ । स० हे सुखीः, हे सुख्यौ, हे सुख्यः । इसीप्रकार सुती (पुत्र की इच्छा करने वाला) शब्द के रूप समझो

(क्रोष्टु-शब्दः) शृगाल, स्यार ।

क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः १ । क्रोष्टारम्, क्रोष्टारौ, क्रोष्टून् २ । क्रोष्टुना, क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः ३ । क्रोष्टवे, क्रोष्ट्रे, क्रोष्टुभ्याम, क्रोष्टुभ्यः ४ । क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टुः, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः ५ । क्रोष्ट्रोः क्रोष्टुः, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टूनाम् ६ । क्रोष्टौ, क्रोष्टरि, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टुषु७। स० क्रोष्टो ! हे क्रोष्टारौ ! हे क्रोष्टारः ! ।

अनुनयः = विनयः = आजिजी । नीहारः = कुहिरा । प्रातराशः = कलेवा, सुबह का भोजन । प्रचयः = समूह । चुलुकम् = चुल्लू । प्राचीनम् = पुराना । अर्वाचीनम् = नया । उपचयः = वृद्धि, तरक्की । अपचयः = हानि, नुकसान । बीजम् = कारण । पर्यवस्था = विरोध । बहिरङ्गम् = बाहरी । अन्तरङ्गम् = भीतरी । तरलम् = चञ्चल । कुङ्कुमम् = केशर । पर्युषितम् = वासी। अरण्यम् = वन । विचक्षणः = होशियार । कृपणः = सूम । पाणिपीडनम् = विवाह । इषीका = सींक ! वितानः = तम्बू । श्रान्तः = थका हुआ । दलम् = पत्र । वार्षिकम् = सालाना । उपयोगः = इस्तेमाल । वियोगः = जुदाई । प्रयोगः = नुसखा । नियोगः = आज्ञा । पटहः = ढोल ।। झल्लकम् = मजीरा । महर्घम् = महँगा । सुलभम् = सस्ता । क्लेदनम् = भिगोना । उपालम्भः = उलहना । आरोहः = ऊंचाई । परिणाहः = मुटाई । आयामः = लम्बाई । विस्तृतिः = चौड़ाई । चित्तम् = तबीयत । चाक्षुषम् = नेत्रका । हूर्च्छनम् = कुटिलता । साचीकृतम् = टेढ़ा कियाहुआ । देवानांप्रियः = मूर्ख । भागिनेयः = भानजा । मण्डूकः = मेंढक ।

(ऊकारान्त हूहू शब्दः हूहू करनेवाला)

हूहूः, हूहौ, हूहः १ । हूहूम् हूहौ,हूहून् २ । हूहा, हूहूभ्याम् , हूहूभिः ३ । हूहे, हूहूभ्याम्‌,हूहूभ्यः ४। हूहः,हूहूभ्याम्, हूहूभ्यः ५। हूहः,हूहोः, हूहाम् ६ । हूहि,हूहोः,हूहूषु ७ स० हे हूहूः ! हे हूहौ ! हे हूहः ॥

(अतिचमू-शब्दः) बहुत सेनावाला ।

अतिचमूः, अतिचम्वौ, अतिचम्वः १ । अतिचमूम् अतिचम्वौ, अतिचमून् २ । अतिचम्वा, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभिः ३ । अतिचम्वै, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः ४ । अतिचम्वाः, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः ५ । अतिचम्वाः, अतिचम्वोः, अतिचमूनाम् ६ । अतिचम्वाम् अतिचम्वोः, अतिचमूषु ७ । स० हे अतिचमु ! हे अतिचम्वौ ! हे अतिचम्वः ! ।

(खलपू-शब्दः) दुष्टों को पवित्र करने वाला ।

खलपूः, खलप्वौ, खलप्वः १ । खलप्वम्, खलप्वौ, खलप्वः २ । खलप्वा, खलपूभ्याम्, खलपूभिः ३। खलप्वे, खलपूभ्याम्,खलपूभ्यः ४ । खलप्वः, खलपूभ्याम्, खलपूभ्यः ५। खलप्वः, खलप्वोः, खलप्वाम् ६ । खलप्वि,खलप्वोः, खलपूषु ७। स० हे खलपूः! हे खलप्वौ,है खलप्वः!८।।

इसी प्रकार सुलू (अच्छे प्रकार काटने वाला) वर्षाभू (वर्षा में पैदा होने वाला) दृन्भू (वज्र) करभू हाथ में उत्पन्न होने वाला) पुनर्भू (फिर होने वाला) शब्दों के रूप होते हैं ।

(स्वभू-शब्दः) ईश्वर ।

स्वभूः, स्वभुवौ, स्वभुवः १ । स्वभुवम्, स्वभुवौ स्वभुवः २ । स्वभुवा, स्वभूभ्याम्, स्वभूभिः ३ । स्वभुवे, स्व-

भूभ्याम् , स्वभूभ्यः ४ । स्वभुवः स्वभूभ्याम् , स्वभूभ्यः ५ । स्वभुवः स्वभुवोः, स्वभुवाम् , ६ । स्वभुवि स्वभुवोः, स्वभूषु ७ । स० हे स्वभूः ! हे स्वभुवौ, हे स्वभुवः ॥

(ऋकारान्त धातृ शब्दः) धारण या पोषण करने वाला ईश्वर ।

धाता, धातारौ, धातारः १ । धातारम् , धातारौ, धातॄन् २ । धात्रा, धातृभ्याम् , धातृभिः ३ । धात्रे, धातृभ्याम् धातृभ्यः ४ । धातुः, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ५ । धातुः, धात्रोः, धातॄणाम् ६ । धातरि, धात्रोः, धातृषु ७ । स० हे धातः- हे धातारौ, हे धातारः, इसी प्रकार कर्तृ = करने वाला भर्तृ = (पति) नप्तृ = (नाती) होतृ = होम करने वाला । प्रशास्तृ = (आज्ञा देने वाला) वक्तृ (कहने वाला) धातृ = धरने वाला । शब्दों के रूप होते हैं ॥

(ऋकारान्त भ्रातृशब्दः) भाई ।

भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः १ । भ्रातरम् , भ्रातरौ । इन पांच वचनो के सिवाय समस्त रूप धातृ के समान होते हैं पितृ = पिता । जामातृ = दामाद । देवृ = देवर । नृ = मनुष्य शब्दों के रूप भ्रातृ के समान होते हैं, परन्तु नृशब्द के षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में भेद है जैसे—नृणाम् नॄणाम् ।

(ऐकारान्त रै शब्दः) धन ।

राः, रायौ, रायः १ । रायम् , रायौ, रायः २ । राया

राभ्याम् राभिः ३ । राये, राभ्याम्, राभ्यः ४ । रायः राभ्याम् राभ्यः ५ । रायः, रायोः, रायाम् ६ । रायि, रायोः रासु ७ । स० हे राः ! हे रायौ, हे रायः ॥

(ओकारान्त गोशब्दः) बैल, गाय ।

गौः, गावौ, गावः १। गाम्, गावौ, गाः २। गवा, गोभ्याम् गोभिः ३ । गवे, गोभ्याम्, गोभ्यः ४। गोः गोभ्याम्, गोभ्यः ५ । गोः गवोः, गवाम् ६ । गवि, गवोः, गोषु ७। स० हे गौः ! हे गावौ, हे गावः ॥

संस्कृत बनाओ ।

इस बन में स्यार बहुत रहते हैं । उन दोनों बालकों में विनय बहुत है । आज रात्रि में कुहरा गिरेगा । ये सब काम पुराने हैं एक भी नया नहीं । विद्या की वृद्धि सबको करनी चाहिये । उसके कहने में विरोध क्यों है ? दोनों बैल रघुवीर और आनन्दप्रकाश के हैं विक्रम के नहीं ।

भाषा बनाओ ।

किमत्र बीजं येन भवन्तोऽत्र नाऽऽगच्छन्ति ! प्रचुराणि बीजानि सन्ति तानीदानीं वक्तुं न वाञ्छामः । भवद्भिः प्रातराशः कृतः ?। वायुनोत्खातास्तरवो विश्वेऽस्माकम् । बहिरङ्गं कार्य्यमस्त्यन्तरङ्गं वा ? पर्युषितमशनं कदापि नो अशनीयम् । किं भवन्तः खल्वः सन्ति । यूयं सर्वे विचक्षणाःस्थ । भागिनेयो महेन्द्रस्य लवपुरं न गमिष्यति ।

॥ इत्यजन्तपुंलिङ्गाः ॥

अथाऽजन्तस्त्रीलिङ्गः (सर्वा-शब्दः) सब ।

सर्वा, सर्वे, सर्वाः १ । सर्वाम् , सर्वे, सर्वाः २ । सर्वया, सर्वाभ्याम्, सर्वाभिः ३ । सर्वस्यै, सर्वाभ्याम् , सर्वाभ्यः ४। सर्वस्याः, सर्वाभ्याम् सर्वाभ्यः ५ । सर्वस्याः, सर्वयोः, सर्वासाम् ६ । सर्वस्याम्, सर्वयोः, सर्वासु ७। स० हे सर्वे, हे सर्वे हे सर्वाः ॥ (१)

(इकारान्त मतिशब्दः) बुद्धि ।

मतिः, मती, मतयः १ । मतिम्, मती, मतीः २ । मत्या मतिभ्याम्, मतिभिः ३ । मत्यै—मतये, मतिभ्याम्, मतिभ्यः४ मत्याः-मतेः, मतिभ्याम्, मतिभ्यः ५ । मत्याः—मतेः, मत्योः, मतीनाम् ६ । मत्याम्—मतौ, मत्योः, मतिषु ७ । हे मते ! हे मती, हे मतयः ।

इसी प्रकार धृति (धीरज) कृति (करना) भृति(नौकरी) नति (प्रणाम) नीति(न्याय) जामि (स्त्री) व्रतति (बेल) तति (पङ्क्ति)छवि(शोभा)जग्धि(भोजन)क्षिति(पृथ्वी)क्षति(हानि) यष्टि (लाठी) उष्टि (निवास) गति(चाल) समिति(सभा)प्राप्ति (लाभ) मुष्टि(घूसा मुक्का)स्मृति (यादृदाश्त)विस्मृति (भूल) भ्रान्ति(झूठी समझ) वृत्ति (जीविका) कीर्त्ति(यश) दृष्टि (देखना) कृषि (खेती) प्रतिपत्ति (सिद्धि)विपत्ति(आफ़त) उपस्थिति (हाज़री) नीवि (कमरबन्ध) चुल्लि (चूल्हा) पद्धति

(१) इसी प्रकार-विश्वा, अन्या, अन्यतरा । इतरा, कतरा, कतमा, समा, सिमा, नेमा, और एका शब्दों के रूप होते हैं ।

(रास्ता) शब्दों के रूप होते हैं ।

(ईकारान्त नदीशब्दः) दरिया ।

नदी, नद्यौ, नद्यः १। नदीम्, नद्यौ, नदीः २। नद्या, नदीभ्याम्, नदीभिः ३। नद्यै, नदीभ्याम्, नदीभ्यः ४। नद्याः नदीभ्याम्, नदीभ्यः ५। नद्याः, नद्योः, नदीनाम् ६। नद्याम्, नद्योः, नदीषु ७। हे नदि ! हे नद्यौ, हे नद्यः। इसीप्रकार कुटी (कोठरी) मैत्री (दोस्ती) अटवी (वन) लिपी (कापी) शैली (रीति) श्रेणी (जमात) नारी (स्त्री) सखी(सहेली) कर्त्री(करनेवाली) हर्त्री (चुरानेवाली) क्रोष्ट्री (शृगाली) पुत्री (लड़की) चोली (अङ्गिया) देहली (चौखट) महती (बड़ी) महिषी (पटरानी, भैंस) छागी (बकरी) गर्धभी (गधैया) शष्कुली (पूड़ी) घृतचौरी (कचौड़ी) तन्त्री (सितार) भवती (आप) विदुषी (पढ़ीलिखी)मन्त्रिणी(मन्त्रीकीस्त्री)आदि शब्दोंके रूप होते हैं।

(श्रीशब्दः) शोभा ।

श्रीः, श्रियौ, श्रियः १। श्रियम् श्रियौ, श्रियः २। श्रिया, श्रीभ्याम्, श्रीभिः ३। श्रिये–श्रियै, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः ४। श्रियः–श्रियाः, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः५। श्रियः–श्रियाः श्रियोः, श्रियाम्, श्रीणाम् ६। श्रियि—श्रियाम्, श्रियोः, श्रीषु ७। स० प्रथमावत् ॥

(स्त्रीशब्दः) नारी, औरत ।

स्त्री, स्त्रियौ, स्त्रियः १। स्त्रियम्, स्त्रीम् , स्त्रियौ,स्त्रियः,

स्त्रीः २ । स्त्रिया, स्त्रीभ्याम् , स्त्रीभिः ३ । स्त्रियै, स्त्रीभ्याम् स्त्रीभ्यः ४। स्त्रियाः, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः ५। स्त्रियाः, स्त्रियोः, स्त्रीणाम् ६ । स्त्रियाम्, स्त्रियोः, स्त्रीषु ७। स० हे स्त्रि ! हे स्त्रियौ, हे स्त्रियः ।

(उकारान्तधेनुशब्दः) गाय ।

धेनुः, धेनू , धेनवः १। धेनुम् , धेनू, धेनूः, २ । धेन्वा, धेनुभ्याम्, धेनुभिः ३ । धेन्वै–धेनवे, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः ४। धेन्वाः-धेनोः, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः ५ । धेन्वाः–धेनोः, धेन्वोः, धेनूनाम् ६ । धेन्वाम्–धेनौ, धेन्वोः, धेनुषु । ७ स० हे धेनो ! हे धेनू , हे धेनवः । इसी प्रकार रज्जू (रस्सी)

(ऊकारान्तवधूशब्दः) बहू ।

वधूः, वध्वौ, वध्वः १ । वधूम्, वध्वौ, वधूः २ वध्वा, वधूभ्याम्, वधूभिः ३ । वध्वै, वधूभ्याम्, वधूभ्यः ४ । वध्वाः वधूभ्याम् , वधूभ्यः ५ । वध्वाः, वध्वोः, वधूनाम् ६। वध्वाम् वध्वोः, वधूषु ७ । स० हे वधु ! हे वध्वौ, हे वध्वः ! इसी प्रकार श्वश्रू (सास) अलाबू (तुम्बी) तनू (शरीर) खर्जू (खाज) कर्कन्धू (बेर) । शब्दों के रूप होते हैं । भ्रू (भौंह) इसके रूप पु० स्वभू के समान होते हैं ।

(ऋकारान्तदुहितृशब्दः) लड़की ।

दुहिता, दुहितरौ, दुहितरः १ । दुहितरम्, दुहितरौ, दुहितॄः २। दुहित्रा, दुहितृभ्याम् , दुहितृभिः ३ । दुहित्रे, दुहितृभ्याम्,

दुहितृभ्यः ४। दुहितुः, दुहितृभ्याम्, दुहितृभ्यः ५। दुहितुः, दुहित्रोः, दुहितॄणाम् ६। दुहितरि, दुहित्रोः, दुहितृषु ७। सं० हे दुहितः! हे दुहितरौ, हे दुहितरः! इसी प्रकार मातृ (मा)॥

(स्वसृ-शब्दः) बहिन ।

स्वसा, स्वसारौ, स्वसारः १। स्वसारम्, स्वसारौ, स्वसॄः २। शेषरूप दुहितृवत् ।

(ओकारान्तद्योशब्दः) आकाश ।

द्यौः, द्यावौ, द्यावः १। द्याम्, द्यावौ, द्याः २। द्यावा द्योभ्याम्, द्योभिः ३। द्यवे, द्योभ्याम्, द्योभ्यः ४। द्योः, द्योभ्याम्, द्योभ्यः ५। द्योः, द्यवोः, द्यवाम् ६। द्यवि, द्यवोः द्योषु

(औकारान्तनौ-शब्दः) नाव ।

नौः, नावौ, नावः १। नावम्, नावौ, नावः २। नावा नौभ्याम्, नौभिः ३। नावे, नौभ्याम्, नौभ्यः ४। नावः, नौभ्याम्, नौभ्यः ५। नावः, नावोः, नावाम् ६। नावि, नावोः नौषु

नैर्मल्यम् = पवित्रता। मालिन्यम् = मलिनता। काठिन्यम् = कठिनता। आनुकूल्यम् = अनुकूलता। प्रातिकूल्यम् = प्रतिकूलता। प्राचुर्यम् = बहुतायत। दार्ढ्यम् = मज़बूती। दौर्बल्य = कमज़ोरी। पाण्डित्यम् = विद्वत्ता, आलिमपना। मौर्ख्यम् मूर्खता। वैचित्र्यम् = विचित्रता, अजीबपना। वैशिष्ट्यम् विशेष। कौशल्यम् = कुशलता। कलम् = मधुर। कौटिल्य = कुटिलता। न्यूनाधिक्यम् = तरमीम। सौकर्यम् = आसानी

वैपरीत्यम् = उलटापन । आकस्मिकम् = अचानक । सुषिरम् = घुना हुआ । गर्त्तम् = गड्ढा । अभिज्ञानम् , निदर्शनम् = नमूना, पहिचान । प्रहारः = चोट । विहारः = भ्रमण । विकलः = घबराया हुआ । वासरम् = दिन । तिमिरम् = अन्धेरा । वाणिज्यम् = व्यापार । मायिकः = कपटी ।

इत्यजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ।

अथाजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ।

(सर्व-शब्दः) सब ।

सर्वम् , सर्वे, सर्वाणि १ । सर्वम् , सर्वे सर्वाणि २ । शेष रूप पुल्लिङ्गवत् ।

(कतरच्छब्दः) कौन ।

कतरत्-द्, कतरे, कतराणि १ । कतरत्-द् , कतरे कतराणि २ । शेषरूप सर्ववत् । एवमेव, कतमत् , इतरत् , अन्यत् अन्यतरत् शब्दों के भी रूप होते हैं ।

अकारान्त श्रीपा-शब्दः) धनपालक कुल ।

श्रीपम्, श्रीपे, श्रीपाणि १, २ । शेषरूप पुस्तकवत् ।

(इकारान्त वारि-शब्दः) पानी ।

वारि, वारिणी, वारीणि १ । वारि, वारिणी, वारीणि २ । वारिणा, वारिभ्याम्, वारिभिः ३ । वारिणे, वारिभ्याम्, वारिभ्यः ४ । वारिणः, वारिभ्याम्, वारिभ्यः ५ । वारिणः

वारिणोः, वारीणाम् ६ । वारिणि, वारिणोः वारिषु ७ । स० हे वारि ! हे वारे ॥

दधि-शब्दः) दही ।

दधि, दधिनि, दधीनि १ । दधि, दधिनी, दधीनि २ । दध्ना, दधिभ्याम्, दधिभिः ३ । दध्ने, दधिभ्याम्, दधिभ्यः ४ । दध्नः, दधिभ्याम्, दधिभ्यः ५ । दध्नः, दध्नोः, दध्नाम् ६ । दध्नि–दधनि, दध्नोः, दधिषु ७ । इसी प्रकार अस्थि (हड्डी) अक्षि (आंख) सक्थि (ऊरू) के रूप होते हैं और शेष इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप वारिवत् समझो ।

संस्कृत बनाओ ।

मैंने और सब पाठशाला देखी हैं परन्तु आपकी पाठशाला कभी भी नहीं देखी । मेरी बुद्धि में तुम्हारी यह बात नहीं आती । क्या वे सब हानि और लाभ को मानते हैं ? उनकी याददास्त बहुत अच्छी है । मैंने कई बार परीक्षा की है । तुमने लाठी उसकी मुष्टि में मारी थी । कमरबन्ध अच्छा नहीं लगता । नदी में स्त्रियां स्नान करने को जाती हैं । तुम्हारी बहू की तबियत कैसी है । देवदत्त की आंख में दर्द होता है ।

भाषा बनाओ ।

भवता दुहितुः पाणिपीडनं कस्मिन् मासे भविष्यति ।

अस्माकं मातुरियमाज्ञा नाऽस्त्यतो वयं गन्तुं न वाञ्छामः। यज्ञदत्तस्य मैत्र्या मदीया महती हानिरभूत्। अनुनयेन लिखामि दलं प्रभो!। गताक्षराणां न शृणोमि वार्त्ताम्। अलीकं नेजकस्येदं कथनं विश्वं मया श्रुतम्। वृन्दावनस्य चरितं लिखितं कवीन्द्रैः। हे हे कचौरि! घृतचौरि नमो नमस्ते।

(उकारान्त मधु-शब्दः) शहद।

मधु, मधुनी, मधूनि १। मधु, मधुनी, मधूनि २। मधुना मधुभ्याम्, मधुभिः३। मधुने, मधुभ्याम्, मधुभ्यः ४। मधुनः, मधुभ्याम्, मधुभ्यः ५। मधुनः, मधुनोः मधूनाम् ६। मधुनि, मधुनोः मधुषु ७ स० हे मधु-मधो! हे मधुनी! हे मधूनी ॥

(ऋकारान्त धातृ-शब्दः)

धातृ धातृणी धातॄणि १। धातृ धातृणी, धातॄणी २। धात्रा धातृणा, धातृभ्याम्, धातृभिः ३। धातृणे-धात्रे-धातृभ्याम्, धातृभ्यः ४। धातृणः-धातुः-धातृभ्याम्, धातृभ्यः ५। धातृणः-धातुः, धातृणोः-धात्रोः, धातॄणाम् ६। धातृणि-धातरि, धातृणोः-धात्रोः, धातृषु ७। स० हे धातः! हे धातृ! हे धातृणी! हे धातॄणि ॥

(प्ररि-शब्दः) अधिक धनवाला कुल।

प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि १। प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि २। प्ररिणा, प्रराभ्याम्, प्रराभिः ३। प्ररिणे, प्रराभ्याम्, प्ररा-

भ्यः ४ । प्रशिणः, प्रशाभ्याम्, प्रशाभ्यः ५ । प्रशिणः, प्रशिणोः, प्रशीणाम् ६ । प्रशिणि, प्रशिणोः, प्रशिषु ७ ।

॥ इत्यजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ॥

अथ हलन्त पुँल्लिङ्गप्रकरणम् ।

(हान्तलिह-शब्दः) चाटनेवाला ।

लिट्–लिड्, लिहौ, लिहः १ । लिहम्, लिहौ, लिहः, २ । लिहा, लिड्भ्याम्, लिड्भिः ३ । लिहे लिड्भ्याम् लिड्भ्यः ४ । लिहः, लिड्भ्याम् , लिड्भ्यः ५ लिहः, लिहोः, लिहाम् ६ । लिहि, लिहोः, लिट्सु-लिट्त्सु ७ । स० हे लिट्, हे लिहौ, हे लिहः ।

(हान्त दुह्–शब्दः) दुहने वाला ।

धुक्–ग, दुहौ दुहः, १ । दुहम् ,दुहौ,दुहः २ । दुहा धुग्भ्याम् धुग्भिः ३ । दुहे, धुग्भ्याम् , धुग्भ्यः ४ । दुहः, धुग्भ्याम् , धुग्भ्यः ५ । दुहः, दुहोः, दुहाम् ६ । दुहि, दुहोः, धुक्षु ७ । स० हे धुग्-क्, हे दुहौ, हे दुहः ॥

(हान्त द्रुह्–शब्दः) द्रोही ।

ध्रुक्-ध्रुग्, ध्रुट्-ध्रुड्, द्रुहौ द्रुहः १ । द्रुहम् , द्रुहौ, द्रुहः २ । द्रुहा, ध्रुग्-ड्भ्याम् , ध्रुग्-ड्भिः ३ । द्रुहे, ध्रुग्-ड्भ्याम् ध्रुग् ड्भ्यः ४ । द्रुहः, ध्रुग्–ड्भ्याम् ध्रु - भ्यः ५ द्रुहः, द्रुहोः, द्रुहाम् ६ । द्रुहि, द्रुहोः, ध्रु सु, ध्रुट्त्सु ध्रुक्षु ७ ।

स० हे ध्रुक्-ग् ध्रुट्-ड्, हे द्रुहौ हे द्रुहः। इसी प्रकार मुह् (बेसुध होने वाला) के रूप होते हैं।

(स्नुह्-शब्दः) उगने वाला ।

स्नुक्-ग् ट्ड् स्नुहौ, स्नुहः१। स्नुहम्, स्नुहौ, स्नुहः२ स्नुहा, स्नुग्-ड्भ्याम्, स्नुग्-ड्भिः ३। स्नुहे, स्नुग्-ड्भ्याम्, स्नुग्-ड्भ्यः ४। स्नुहः, स्नुग्-ड्भ्याम्, स्नुग्-ड्भ्यः ५। स्नुहः स्नुहोः, स्नुहाम् ६। स्नुहि, स्नुहोः, स्नुक्षु, स्नुट्त्सु, स्नुट्सु ७। स० हे स्नुक्-ग् ट् ड्, हे स्नुहौ हे स्नुहः। इसी प्रकार स्निह् (स्नेह कर्त्ता) शब्दके रूप होते हैं।

(विश्ववाह्-शब्दः) सर्व संसार का धारक

विश्ववाट्-ड्, विश्ववाहौ, विश्ववाहः १। विश्ववाहम्, विश्ववाहौ, विश्वौहः २। विश्वौहा, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भिः ३। विश्वौहे, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः ४। विश्वौहः, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः ५। विश्वौहः, विश्वौहोः, विश्वौहाम् ६। विश्वौहि, विश्वौहोः, विश्ववाट्त्सु विश्ववाट्सु ७। स० प्रथमावत् ॥

(अनडुह् शब्दः) बैल ।

अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः १। अनड्वाहम्, अनड्वाहौ, अनडुहः २। अनडुहा, अनडुद्भ्याम् ४। अनडुद्भिः ३। अनडुहे, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः४। अनडुहः, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः ५। अनडुहः अनडुहोः अनडु-

हाम् ६। अनडुहि, अनडुहोः, अनडुत्सु ७। स०हे अनड्वन्! हे अनड्वाहौ, हे अनड्वाहः ॥

भाषा बनाओ।

भवतोऽस्य शकटस्याऽनड्वाहौ वरौ स्तः। भवन्तोऽत्रकाशं वाञ्छन्ति तर्हि तत्र गच्छन्तु। द्रुहि भवति तेषां विश्वासो न भविष्यति। इयं कस्य पुत्री देहल्यां तिष्ठति। युवां जानीथः? मामक्यां कुट्यां तस्कराः प्रविष्टाः सन्ति। सत्वरमागच्छन्तु भवन्तः। क्षिताविदानीं यूयं न शेध्वं कुतो वृश्चिका अत्र निर्गच्छन्ति। भवन्तावस्मिन् विषये मह्यं कां सम्मतिं दत्तः। तत्र तृतीयस्मिन् गृहे के गमिष्यन्ति, अहं तु न गच्छामि।

संस्कृत बनाओ।

इस समाज का वार्षिकोत्सव कब होगा? आप जानते हैं धर्म के कामों में विघ्न हुआ ही करते हैं। इस संसार में हमारी रक्षा करने वाला परमात्मा है। शहद में दही मिलाकर कैसा होता है। आप को इस समय कौनसी बीमारी है उसी का इलाज करूँ। इस शीशी की दवा नई है अथवा पुरानी।

(तुरासाह् शब्दः) सूर्य, विजली।

तुराषाट्-ड्, तुरासाहौ, तुरासाहः १। तुरासाहम्, तुरासाहौ, तुरासाहः २। तुरासाहा, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भिः ३। तुरासाहे, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः ४।

तुरासाहः तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः ५ ।तुरासाहः, तुरासाहोः, तुरासाहाम् ६ । तुरासाहि तुरासाहोः तुराषाट्त्सु तुराषाट्सु ७ । स० प्रथमावत् ।

(सुदिव् शब्दः) साफ आकाश ।

सुद्यौः, सुदिवौ, सुदिवः १। सुदिवम्, सुदिवौ, सुदिवः २ सुदिवा, सुद्युभ्याम्, सुद्युभिः ३ । सुदिवे, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः ४।सुदिवः, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः ५। सुदिवः सुदिवोः, सुदिवाम् ६। सुदिवि, सुदिवोः सुद्युषु ७ । स० प्रथमावत् ।

(रेफान्तचतुर्-शब्दः) चार ।

चत्वारः १, चतुरः २, चतुर्भिः ३, चतुर्भ्यः ४, ५, चतुर्णाम् ६, चतुर्षु ७ ॥

(प्रशाम् शब्दः) अतिशान्त ।

प्रशान् प्रशामौ, प्रशामः, १। प्रशामम्, प्रशामौ, प्रशामः २ प्रशामा, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः ३। प्रशामे, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः ४। प्रशामः, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः ५। प्रशामः, प्रशामोः, प्रशामाम् ६। प्रशामि प्रशामोः, प्रशान्सु ७॥ स० हे प्रशान् ! हे प्रशामौ ! हे प्रशामः ॥

(इदम् शब्दः) यह ।

अयम्, इमौ, इमे १। इमम्-एनम्, इमौ-एनौ, इमान् एनान् २। अनेन-एनेन, आभ्याम्, एभिः ३ । अस्मै, आभ्याम्, एभ्यः ४ । अस्मात्, आभ्याम्, एभ्यः ५ । अस्य

अनयोः एनयोः, एषाम् ६। अस्मिन, अनयोः-एनयोः, एषु ७॥

(राजन् शब्दः) राजा ।

राजा, राजानौ, राजानः १। राजानम् , राजानौ, राज्ञः २। राज्ञा, राजभ्याम् , राजभिः ३। राज्ञे, राजभ्याम्, राजभ्यः ४। राज्ञः, राजभ्याम्, राजभ्यः ५। राज्ञः राज्ञोः, राज्ञाम् ६। राज्ञि-राजनि, राज्ञोः, राजसु ७। स० हे राजन् ! हे राजानौ, हे राजानः ॥

(यज्वन् शब्दः) यज्ञ करने वाला ।

यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः १। यज्वानम्, यज्वानौ, यज्वनः २। यज्वना, यज्वभ्याम्, यज्वभिः ३। यज्वने, यज्वभ्याम् , यज्वभ्यः ४। यज्वनः, यज्वभ्याम्, यज्वभ्यः ५ यज्वनः, यज्वनोः, यज्वनाम् ६। यज्वनि, यज्वनोः यज्वसु ७ स० हे यज्वन् ! हे यज्वानौ, हे यज्वानः ! इसी प्रकार ब्रह्मन शब्द के रूप होते हैं ॥

(वृत्रहन् शब्दः) बादल को दूर करने वाला ।

वृत्रहा, वृत्रहणौ, वृत्रहणः १ वृत्रहणम, वृत्रहणौ, वृत्रघ्नः २ वृत्रघ्ना, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभिः ३ । वृत्रघ्ने, वृत्रहभ्याम, वृत्रहभ्यः ४ । वृत्रघ्नः, वृत्रहभ्याम् , वृत्रहभ्यः ५ । वृत्रघ्नः वृत्रघ्नोः, वृत्रघ्नाम ६। वृत्रहणि-वृत्रघ्नि, वृत्रघ्नोः, वृत्रहसु ७ हे वृत्रहन , हे वृत्रहणौ, हे वृत्रहणः । इसी प्रकार अर्यमन् (सूर्य) शब्द के रूप होते हैं ।

(मघवन् शब्दः) सूर्य, बिजली ।

मघवान, मघवन्तौ, मघवन्तः १। मघवन्तम् ,मघवन्तौ मघवतः २। मघवता, मघवद्भ्याम् , मघवद्भिः ३। मघवते मघवद्भ्याम् , मघवद्भ्यः ४ । मघवतः, मघवद्भ्याम् मघवद्भ्यः ५ । मघवतः, मघवतोः, मघवताम्, ६ । मघवति, मघवतोः, मघवत्सु ७ । स०हे मघवन ! हे मघवन्तौ, हे मघवन्तः । द्वितीयपक्षे । मघवा, मघवानौ, मघवानः १ । मघवानम् , मघवानौ, मघोनः २। मघोना, मघवभ्याम्, मघवभिः ३ । मघोने, मघवभ्याम् , मघवभ्यः ४ । मघोनः, मघवभ्याम्, मघवभ्यः ५। मघोनः, मघोनोः, मघोनाम् ६। मघोनि, मघोनोः, मघवसु ७। स० हे मघवन् ! हे मघवानौ, हे मघवानः ।

(युवन् शब्दः) जवान ।

युवा, युवानौ, युवानः १। युवानम् युवानौ, यूनः २। यूना, युवभ्याम् , युवभिः ३ । यूने, युवभ्याम् , युवभ्यः ४। यूनः, युवभ्याम्, युवभ्यः ५ । यूनः, यूनोः, यूनाम् ६ । यूनि यूनोः युवसु ७ । स० हे युवन् ! हे युवानौ, हे युवानः ।

(अर्वन् शब्दः) घोड़ा ।

अर्वा, अर्वन्तौ, अर्वन्तः १ । अर्वन्तम् , अर्वन्तौ,अर्वतः२ अर्वता,अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भिः ३ । अर्वते,अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः ४ । अर्वतः, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः ५ । अर्वतः, अर्वतोः,

अर्वताम् ६ । अर्वति, अर्वतोः, अर्वत्सु ७ । स० हे अर्वन् हे अवन्तौ, हे अर्वन्तः ॥

प्राची = पूर्व, मशरिक । प्रतीची = पश्चिम, मग़रिब उदीची उत्तर, शुमाल । अवाची = दक्षिण, जनूब । आग्नेयी = पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा। नैर्ऋती = दक्षिण और पश्चिमके मध्य की दिशा। वायवी = पश्चिम और उत्तरके बीच की दिशा । ऐशानी = उत्तर और पूर्व के बीचकी दिशा। राजकीयम् = सरकारी । यौष्माकीणम् = तुम्हारा, रे, री । आस्माकीनम् = हमारा, रे, री । भूरिमायः = स्यार । लालसा = चाह । वारम्वारम् = कईबार । प्रातस्तनम् = सुबहका । श्वस्तनम् = आगामीकलका। ह्यस्तनम् = गये कलका। दोषातनम् = रात्रि का । ईषद्धसनम् = मुस्कराना । परिसर्गः = लपेटना । परिष्कारः-सजावट । आतपत्रम् = छाता। त्वाचम् = चमड़ेका चिरक्रियः = आलसी । मितम्पचः = कंजूस । ऊढा = व्याही । अनूढः = बे व्याहा ।

(पथिन् शब्दः) मार्ग ।

पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः १ । पन्थानम्, पन्थानौ, पथः २ । पथा, पथिभ्याम्, पथिभिः ३ । पथे, पथिभ्याम्, पथिभ्यः ४ । पथः पथिभ्याम्, पथिभ्यः ५ । पथः, पथोः, पथाम् ६ । पथि, पथोः, पथिसु ७ । इसी प्रकार मथिन् (विलोने वाला) ऋभुक्षिन (अन्तरिक्ष) शब्दों के रूप जानो ।

(नान्त पञ्चन् शब्दः) पांच ।

पञ्च १, पञ्च २, पञ्चभिः ३, पञ्चभ्यः ४, ५, पञ्चानाम् ६, पञ्चसु ७ । इसी प्रकार सप्तन् (सात) नवन् (नौ) दशन् (दश) शब्दों के रूप होते हैं ।*

(अष्टन् शब्दः) आठ ।

अष्टौ-अष्ट १ अष्टौ-अष्ट २ । अष्टभिः अष्टाभिः ३ । अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः ४ । अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः ५ । अष्टानाम् ६। अष्टसु-अष्टासु ७ ॥

(ऋत्विज् शब्दः) हवनकर्त्ता ।

ऋत्विक्-ग्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः १ । ऋत्विजम्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः २ । ऋत्विजा, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भिः ३ ऋत्विजे, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः ४। ऋत्विजः, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः ५ । ऋत्विजः, ऋत्विजोः, ऋत्विजाम् ६ । ऋत्विजि, ऋत्विजोः, ऋत्विक्षु ७ । स० प्रथमावत् ।

(भाषा बनाओ)

एभिर्बालकैरिदानीं जलं न पीतम् पीत्वाऽऽगमिष्यन्ति । आस्माकीना वडवा प्राच्यां गतोदीच्यां वा ?। वयमिदानीं प्रतीच्या आगच्छामोऽतो न विजानीमः । ह्यस्तनं तावकीनं किम् कार्यमस्ति । सायन्तनस्य कार्यस्य स्मृतिरस्ति नास्ति

---

* पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्, शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं ।

वा ? मुरादाबादनगरस्यैशान्यां राजीकीया महती पाठश
लाविद्यते । अस्मिन् कोनानि पञ्च पुस्तकानि सन्ति तानि भ
वद्भिः दृष्टानि ? । वारं वारं पठति पाठं धर्मवीरो न छात्र

[संस्कृत बनाओ]

ये किस राजा के घोड़े हैं क्या आप जानते हैं ? तुम्हारा आठ दिन का काम है या दश का ? इस बनमें च रास्ते हैं इस लिये मैं किस रास्ते से जाऊँ ? तुम सब अ पुरुषों में से युद्ध के लिये कौन जायगा ? । जवानों काम जवान ही करते हैं लड़के नहीं करते । यह बात सत्य

[युज्-शब्दः]

युङ्, युञ्जौ, युञ्जः १ । युञ्जम्, युञ्जौ, युजः २ । यु युग्भ्याम्, युग्भिः ३ । युजे, युग्भ्याम्, युग्भ्यः ४ । युजः, ग्भ्याम्, युग्भ्यः ५ । युजः युजोः, युजाम् ६ । युजि युजो युक्षु ७ । स० प्रथमावत् ।

[सुयुज्-शब्दः] सम्यग् मिला हुआ ।

सुयुक्-ग्, सुयुजौ, सुयुजः १ । सुयुजम्, सुयुजौ, सुयु २ । सुयुजा, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भिः ३ । सुयुजे, सुयुग्भ्या सुयुग्भ्यः ४ । सुयुजः सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भ्यः ५ । सुयु सुयुजोः, सुयुजाम् ६ । सुयुजि, सुयुजोः, सुयुक्षु ७ । स प्रथमावत् ॥

[खञ्ज्-शब्दः] लूला ।

खन्, खञ्जौ, खञ्जः १। खञ्जम्, खञ्जौ, खञ्जः २ खञ्जा खन्भ्याम्, खन्भिः ३। खञ्जे, खन्भ्याम्, खन्भ्यः ४। खञ्जः खन्भ्याम्, खन्भ्यः ५ । खञ्जः, खञ्जोः, खञ्जाम् ६ । खञ्जि, खञ्जोः, खन्सु ७ । स० प्रथमावत् ॥

[विश्वराट्-शब्दः] ईश्वर ।

विश्वाराट्-ड्, विश्वराजौ, विश्वराजः १ । विश्वराजम् विश्वराजौ, विश्वराजः २ । विश्वराजा, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भिः ३ । विश्वराजे, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः ४ । विश्वराजः, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः ५ । विश्वराजः, विश्वराजोः, विश्वराजाम् ६। विश्वराजि, विश्वराजोः विश्वाराट्सु विश्वाराट्त्सु ७ ।

[भृस्ज्-शब्दः] भुर्जी ।

भृट्-ड्, भृज्जौ, भृज्जः, १ । भृज्जम्, भृज्जौ, भृज्जः २ । भृज्जा, भृड्भ्याम्, भृड्भिः ३। भृज्जे, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः ४ भृज्जः भृड्भ्याम् भृड्भ्यः ५। भृज्जः, भृज्जोः, भृज्जाम् ६ । भृज्जि भृज्जोः, भृट्त्सु भृट्सु । स० प्रथमावत् ।

[त्यद्-शब्दः] वह ।

त्यः, त्यौ, त्ये १ । त्यम्, त्यौ, त्यान् २ । त्येन, त्याभ्याम्, त्यैः ३ । त्यस्मै, त्याभ्याम, त्येभ्यः ४ । त्यस्मात्,

त्याभ्याम्, त्येभ्यः५। त्यस्य, त्ययोः, त्येषाम् ६ । त्यस्मिन् त्ययोः, त्येषु ७।

[एतद्-शब्दः] यह ।

एषः, एतौ, एते १ । एतम्-एनम्, एतौ-एनौ, एतान् एनान् २। एतेन-एनेन, एताभ्याम्, एतैः३।एतस्मै, एताभ्याम् एतेभ्यः४ । एतस्मात्, एताभ्याम् एतेभ्यः ५ । एतस्य एतयोः-एनयोः, एतेषाम् ६ । एतस्मिन्, एतयोः-एनयोः एतेषु ७।

[सुपाद्-शब्दः] अच्छे पैर वाला ।

सुपात्-द्, सुपादौ, सुपादः १। सपादम्, सुपादौ, सुपदः २ । सुपदा, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भिः ३ । सुपदे, सुपाद्भ्याम् सुपाद्भ्यः४ । सुपदः, सुपाद्भ्याम्,सुपाद्भ्यः५। सुपदः सुपदोः सुपदाम् ६ । सुपदि, सुपदोः, सुपात्सु ७ स० प्रथमावत् ॥

[अग्निमथ्-शब्दः] अग्नि मथने वाला ।

अग्निमद्-त्, अग्निमथौ, अग्निमथः १ । अग्निमथम्, अग्निमथौ, अग्निमथः २ । अग्निमथा, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भिः ३। अग्निमथे, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः ४। अग्निमथः, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः ५ । अग्निमथः अग्निमथोः अग्निमथाम् ६ । अग्निमथि, अग्निमथोः, अग्निमथिषु ७ ॥

(प्राञ्च् शब्दः) पूर्व दिशा को जाने वाला ।

प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः १ । प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राचः २। प्राचा, प्राग्भ्याम्, प्राग्भिः ३ । प्राचे, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः ४। प्राचः, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः ५। प्राचः, प्राचोः, प्राचाम् ६ । प्राचि, प्राचोः, प्राक्षु ७ । सं० प्रथमावत् ।

(प्रत्यञ्च् शब्दः) पश्चिमदिशा को जाने वाला।

प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः १। प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ, प्रतीचः, २ । प्रतीचा, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भिः ३ । प्रतीचे, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ४ । प्रतीचः, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ५। प्रतीचः, प्रतीचोः, प्रतीचाम् ६। प्रतीचि, प्रतीचोः, प्रत्यक्षु ७।

(उदञ्च् शब्दः) उत्तरदिशा को जाने वाला !

उदङ्, उदञ्चौ उदञ्चः, १ । उदञ्चम् उदञ्चौ, उदीचः २ । उदीचा, उदग्भ्याम्, उदग्भिः ३ । उदीचे, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः ४। उदीचः, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः ५। उदीचः, उदीचोः, उदीचाम् ६ । उदीचि, उदीचोः, उदक्षु ७ । सं० प्रथमावत् ।

(सम्यञ्च् शब्दः) मनोहर ।

सम्यङ्, सम्यञ्चौ, सम्यञ्चः, १ । सम्यञ्चम्, सम्यञ्चौ, समीचः २ । समीचा, सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भिः ३ । समीचे सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भ्यः ४ । समीचः सम्य-

ग्भ्याम् ,सम्यग्भ्यः ५ । समीचः, समीचोः, समीचाम् ६ । समीचि, समीचोः, सम्यक्षु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(सह्राञ्च् शब्दः) साथ चलने वाला ।

सध्र्यङ्, सध्र्यञ्चौ, सध्र्यञ्चः १ । सध्र्यञ्चम् । सध्र्यञ्चौ, सध्रीचः २ । सध्रीचा, सध्र्यग्भ्याम् , सध्र्यग्भिः ३ । सध्रीचे, सध्र्यग्भ्याम् , सध्र्यग्भ्यः ४ । सध्रीचः सध्र्यग्भ्याम् , सध्र्यग्भ्यः ५ । सध्रीचः, सध्रीचोः, सध्रीचाम् ६। सध्रीचि, सध्रीचोः, सध्र्यक्षु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(तिरसञ्च् शब्दः) तिरछी चाल वाला ।

तिर्यङ् , तिर्यञ्चौ, तिर्यञ्चः १ । तिर्यञ्चम् , तिर्यञ्चौ, तिरश्चः २ । तिरश्चा, तिर्यग्भ्याम् , तिर्यग्भिः ३ । तिरश्चे, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भ्यः ४ । तिरश्चः, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भ्यः ५ । तिरश्चः, तिरश्चोः, तिरश्चाम् ६ । तिरश्चि तिरश्चोः, तिर्यक्षु ७ । स० प्रथमावत् ।

(प्राञ्च् शब्दः) पूजावाचक ।

प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः १ । प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः, २ । प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भिः ३ । प्राञ्चे, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भ्यः ४ । प्राञ्चः, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भ्यः ५ । प्राञ्चः, प्राञ्चोः, प्राञ्चाम् ६ । प्राञ्चि, प्राञ्चोः, प्राङ्षु-प्राङ्क्षु ७। स० प्रथमावत् ॥

(क्रुञ्च् शब्दः) क्रुञ्च पक्षी ।

क्रुङ्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः १ । क्रुञ्चम् , क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः २ । क्रुञ्चा, क्रुङ्भ्याम् , क्रुङ्भिः ३ । क्रुञ्चे, क्रुङ्भ्याम् , क्रुङ्भ्यः ४ । क्रुञ्चः, क्रुङ्भ्याम् , क्रुङ्भ्यः ५ । क्रुञ्चः, क्रुञ्चोः, क्रुञ्चाम् ६ । क्रुञ्चि, क्रुञ्चोः, क्रुङ्षु क्रुङ्क्षु ७ ।

लवपुरम् = लाहौर । जयपुरम् = जयपुर । योधपुरम् = जोधपुर । उदयपुरम् = उदयपुर । लक्ष्मणपुरम् = लखनऊ । पुरुषपुरम् = पेशावर । कर्णपुरम् = कानपुर । अर्गलपुरम् = आगरा । वाराणसी = बनारस । प्रयागः = इलाहाबाद । कालिकता = कलकत्ता । मुम्बापुरी = बम्बई । मयराष्ट्रम् = मेरठ । अजमीढः = अजमेर । पाटलिपुत्रम् = पटना । अवन्तिपुरी = उज्जैन । कृष्णापुरी = मथुरा । इन्द्रप्रस्थम् = देहली । वृन्दावनम् = वृन्दावन । मयनपुरी = मैनपुरी ।

(पयोमुच् शब्दः) बादल ।

पयोमुक्-ग् - पयोमुचौ, पयोमुचः १ । पयोमुचम् , पयोमुचौ, पयोमुचः २ । पयोमुचा, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भिः ३ । पयोमुचे, पयोमुग्भ्याम् , पयोमुग्भ्यः ४ । पयोमुचः, पयोमुग्भ्याम् , पयोमुग्भ्यः ५ । पयोमुचः, पयोमुचोः, पयोमुचाम् ६ । पयोमुचि पयोमुचोः, पयोमुक्षु ७ । स० प्रथमावत् ।।

(महत् शब्दः) बड़ा ।

महान् महान्तौ, महान्तः १ । महान्तम् , महान्तौ,

महतः २। महता, महद्भ्याम्, महद्भिः ३। महते, महद्भ्याम्, महद्भ्यः ४। महतः, महद्भ्याम्, महद्भ्यः ५। महतः, महतोः, महताम् ६। महति, महतोः, महत्सु ७। स० हे महन्! हे महान्तौ, हे महान्तः।

(ददत् शब्दः) देता हुआ।

ददत्, ददतौ, ददतः १। ददतम्, ददतौ, ददतः २। ददता, ददद्भ्याम्, ददद्भिः ३। ददते, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः ४। ददतः, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः ५। ददतः, ददतोः, ददताम् ६। ददति, ददतोः, ददत्सु ७। स० प्रथमावत्। इसी प्रकार जक्षत् (खाता हुआ) जाग्रत् (जागता हुआ) दरिद्रत् (कङ्गाल होता हुआ) शासत् (शिक्षा करता हुआ) चकासत् (प्रकाश करता हुआ) के रूप होते हैं।

(तादृश् शब्दः) तैसा।

तादृक्-ग्, तादृशौ, तादृशः १। तादृशम्, तादृशौ, तादृशः २। तादृशा, तादृग्भ्याम्, तादृग्भिः ३। तादृशे, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः४। तादृशः, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः५। तादृशः, तादृशोः, तादृशाम्६। तादृशि, तादृशोः, तादृक्षु ७।

(विश् शब्दः) प्रवेश करने वाला।

विट्-विड्, विशौ, विशः १। विशम्, विशौ विशः२। विशा, विड्भ्याम्, विड्भिः ३। विशे, वि भ्याम्, विड्भ्यः ४। विशः, विड्भ्याम्, विड्भ्यः ५। विशः, विशोः,

विशाम् ६ । विशि, विशोः, विट्त्सु, विट्सु ७ ।

(नश् शब्दः) नाशवान् ।

नक्-ग्-ट्-ड्, नशौ, नशः १ । नशम्, नशौ, नशः २ । नशा, नड्-ग्-भ्याम्-नड्भिः ३ । नशे, नड्भ्याम्, नड्भ्यः ४। नशः, नड्-ग्भ्याम्, नड्भ्यः ५ । नशः, नशोः, नशाम् ६। नशि, नशोः, नक्षु नट्त्सु नट्सु७। स०प्रथमावत्॥

(भाषा बनाओ ।

युष्माकं युञ्जः खञ्जः सन्ति । एते राजानो विश्वराजि विश्वासम् कुर्वन्ति । तस्मै सुपदे नमोऽस्तु मे । एतस्याऽग्नि-मथोभृज्जः पात्रं वरं नास्ति । भवतस्तरवो नगरात् प्राच्याम् उदीच्यां वा दिशि सन्ति । तिरश्चां कुटिलागतिः । यादृक् करणं तादृक् भरणमितीश्वरीयनियमः । जयपुरम् जयसिंह-विनिर्मितम् । लवपुरे भवतो भवनं महत् ।

(षष् शब्दः) छः ।

षट्-ड् १ । षट्-ड् २ । षड्भिः ३। षड्भ्यः ४ । षड्भ्यः ५। षण्णाम्६। षट्सु षट्त्सु७ ॥

(पिपठिष् शब्दः) पढ़ने की इच्छा करनेवाला ।

पिपठीः, पिपठिषौ, पिपठिषः१। पिपठिषम्, पिपठिषौ, पिपठिषः २ । पिपठिषा, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भिः । पिप-ठिषे, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भ्यः ४ । पिपठिषः, पिपठीर्भ्याम्,

पिपठीर्भ्यः ५। पिपठिषः, पिपठिषोः, पिपठिषाम् ६। पिपठीषि पिपठिषोः, पिपठीःषु-ष्षु ७। स० प्रथमावत् ॥

(चिकीर्ष् शब्दः) करने की इच्छा करनेवाला।

चिकीः, चिकीर्षौ, चिकीर्षः १। शेषरूप पिपठिष्वत्।

(विद्वस् शब्दः) विद्वान्, आलिम।

विद्वान, विद्वांसौ, विद्वांसः १। विद्वांसम्, विद्वांसौ विदुषः २। विदुषा, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भिः ३। विदुषे, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः ४। विदुषः, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः ५। विदुषः, विदुषोः, विदुषाम् ६। विदुषि विदुषोः, विद्वत्सु ७। हे विद्वन! हे विद्वांसौ, हे विद्वांसः ॥

(पुंस् शब्दः) पुरुष, आदमी।

पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः १। पुमांसम्, पुमांसौ, पुंसः २। पुंसा, पुम्भ्याम्, पुम्भिः ३। पुंसे, पुंभ्याम्, पुंभ्यः ४। पुंसः, पुम्भ्याम्, पुम्भ्यः ५। पुंसः, पुंसोः, पुंसाम् ६। पुंसि, पुंसोः, पुंसु ७। हे पुमन! हे पुमांसौ, हे पुमांसः।

(उशनस् शब्दः) शुक्र।

उशना, उशनसौ, उशनसः १। उशनसम्, उशनसौ, उशनसः २। उशनसा, उशनोभ्याम्, उशनोभिः ३। उशनसे, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः ४। उशनसः, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः ५। उशनसः, उशनसोः, उशनसाम् ६। उशनसि,

उशनसोः, उशनस्सु ७ । स० हे उशनन्-उशनः-उशन, हे उशनसौ, हे उशनसः ॥

(अनेहस् शब्दः) समय ।

अनेहाः, अनेहसौ, अनेहसः १ । अनेहसम्, अनेहसौ, अनेहसः २ । अनेहसा, अनेहोभ्याम्, अनेहोभिः ३ । अनेहसे, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः ४ । अनेहसः, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः ५ । अनेहसः, अनेहसोः, अनेहसाम् ६ । अनेहसि, अनेहसोः, अनेहस्सु ७ । स० हे अनेहः ! हे अनेहसौ, हे अनेहसः ।

(वेधस् शब्दः) विधाता ।

वेधाः, वेधसौ, वेधसः १ । शेषरूप अनेहस्वत् ॥

(अदस् शब्दः) वह ।

असौ, अमू, अमी १ । अमुम, अमू, अमून २ । अमुना, अमूभ्याम्, अमीभिः ३ । अमुष्मै, अमूभ्याम्, अमीभ्यः ४ । अमुष्मात्, अमूभ्याम्, अमीभ्यः ५ । अमुष्य, अमुयोः, अमीषाम ६ । अमुष्मिन्, अमुयोः, अमीषु ७ ॥

[धनिन् शब्दः] धनवान् ।

धनी, धनिनौ, धनिनः १ । धनिनम्, धनिनौ, धनिनः २ । धनिना, धनिभ्याम्, धनिभिः ३ । धनिने, धनिभ्याम्, धनिभ्यः ४ । धनिनः, धनिभ्याम्, धनिभ्यः ५ । धनिनः, धनिनोः, धनिनाम् ३ । धनिनि, धनिनोः, धनिषु ७ । स० हे धनिन्!

हे धनिनौ, हे धनिनः । इसी प्रकार—ज्ञानिन्, मानिन, ध्यानिन् आदि शब्दों के रूप होते हैं ।

[क्वसु प्रत्ययान्त तस्थिवस् शब्दः] ठहरा हुआ ।

तस्थिवान्, तस्थिवांसौ, तस्थिवांसः १ । तस्थिवांसम्, तस्थिवांसौ, तस्थुषः २। तस्थुषा, तस्थिवद्भ्याम्, तस्थिवद्भिः ३ । तस्थुषे, तस्थिवद्भ्याम् , तस्थिवद्भ्यः ४ । तस्थुषः, तस्थिवद्भ्याम् , तस्थिवद्भ्यः ५ । तस्थुषः, तस्थुषोः, तस्थुषाम् ६ । तस्थुषि, तस्थुषोः, तस्थिवत्सु ७ । स० हे तस्थिवन् ! हे तस्थिवांसौ, तस्थिवांसः ॥

[शुश्रुवस् शब्दः] जिसने सुना हो ।

शुश्रुवान् , शुश्रुवांसौ, शुश्रुवांसः १ । शुश्रुवांसम्, शुश्रुवांसौ, शुश्रुषः २ । शुश्रुषा, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भिः ३ । शुश्रुषे, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भ्यः ४ । शुश्रुषः, शुश्रुवद्भ्याम् , शुश्रुवद्भ्यः ५ । शुश्रुषः, शुश्रुषोः, शुश्रुषाम् ६ । शुश्रुषि, शुश्रुषोः, शुश्रुवत्सु ७ । स० हे शुश्रुवन् !

वलिष्ठः = बहुत बलवान् । कनिष्ठः = बहुत छोटा । घनिष्ठः = बहुत गाढ़ा । दविष्ठम् = बहुत दूर । पटिष्ठः = बहुत चतुर । धर्मिष्ठः = बहुत धर्मात्मा । पापिष्ठः = बहुत पापी । भूयिष्ठम् = बहुत ही । धनिष्ठः = बहुत धनी । श्रेष्ठः = बहुत अच्छा । हस्तक्षेपः = दस्तन्दाजी ॥

इति हलन्तपुलिङ्ग प्रकरणम् ।

अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ।

(हान्त उपानह् शब्दः) जूता ।

उपानत्–द्, उपानहौ, उपानहः १ । उपानहम्, उपानहौ, उपानहः २ । उपानहा, उपानद्भ्याम्, उपानद्भिः ३ । उपानहे, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः ४ । उपानहः, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः ५ । उपानहः, उपानहोः, उपानहाम् ६ । उपानहि, उपानहोः, उपानत्सु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(हान्त उष्णिह् शब्दः)

उष्णिक्-ग्, उष्णिहौ, उष्णिहः १ । उष्णिहम्, उष्णिहौ, उष्णिहः २ । उष्णिहा, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भिः ३ । उष्णिहे, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भ्यः ४ । उष्णिहः उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भ्यः ५ । उष्णिहः, उष्णिहोः, उष्णिहाम् ६। उष्णिहि, उष्णिहोः, उष्णिक्षु ७ । स० प्रथमावत् ।

[वान्तोदिव् शब्दः] आकाश ।

द्यौः, दिवौ, दिवः १ । दिवम्, दिवौ, दिवः २ । दिवा, द्युभ्याम्, द्युभिः ३ । दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः ४ । दिवः, द्युभ्याम्, द्युभ्यः ५ । दिवः, दिवोः, दिवाम् ६ । दिवि, दिवोः, द्युषु ७ ।

[रेफान्तो गिर् शब्दः] वचन, वाणी ।

गीः, गिरौ, गिरः १ । गिरम्, गिरौ, गिरः २ । गिरा,

गीर्भ्याम् गीर्भिः ३ । गिरे, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः ४ । गिरः, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः ५ । गिरः, गिरोः गिराम् ६। गिरि, गिरोः, गीर्षु ७ । एवं 'पुर्' शब्दस्य रूपाणि विज्ञेयानि ।

(रेफान्तश्चतुर् शब्दः) चार ।

चतस्रः १। चतस्रः २ ।चतसृभिः ३। चतसृभ्यः ४। चतसृभ्यः ५ । चतसृणाम् ६ । चतसृषु ७ ।

(मान्तः किम् शब्दः) कौन ।

का, के, काः १ । काम्, के, काः २ । कया, काभ्याम्, काभिः ३ । कस्यै, काभ्याम् काभ्यः ४ । कस्याः, काभ्याम्, काभ्यः ५ । कस्याः, कयोः, कासाम् ६ । कस्याम् कयोः, कासु ७ ।

(मान्त इदम् शब्दः) यह ।

इयम्, इमे, इमाः १ । इमाम्–एनाम्–इमे एने, इमाः एनाः २ । अनया, एनया, आभ्याम्, आभिः ३ अस्यै, आभ्याम्, आभ्यः ४ । अस्याः, आभ्याम्, आभ्यः ५ । अस्याः, अनयोः–एनयोः, आसाम् ६ । अस्याम्, अनयोः एनयोः, आसु ७ ।

(दान्तस्त्यद् शब्दः) वह ।

स्या, त्ये, त्याः १ । त्याम्, त्ये, त्याः २ । त्यया, त्याभ्याम्, त्याभिः ३ । त्यस्यै, त्याभ्याम्, त्याभ्यः ४ । त्यस्याः, त्याभ्याम्, त्याभ्यः ५ । त्यस्याः, त्ययोः त्या-

साम् ६ । त्यस्याम्, त्ययोः, त्यासु । एवमेव तद् यद् एतद्-शब्दानां रूपाणि बोध्यानि ।

(चान्तः वाच् शब्दः) वाणी ।

वाक्-ग्, वाचौ, वाचः १ । वाचम्, वाचौ, वाचः २ । वाचा, वाग्भ्याम्, वाग्भिः ३ । वाचे, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः ४ । वाचः, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः ५ । वाचः, वाचोः, वाचाम् ६ । वाचि, वाचोः, वाक्षु ७ ।

(पान्तोऽप् शब्दः) जल ।

आपः १ । अपः २ । अद्भिः ३ । अद्भ्यः ४ । अद्भ्यः ५ । अपाम् ६ । अप्सु ७ ।

(शान्तो दिश् शब्दः) दिशा ।

दिक्-ग्, दिशौ, दिशः १ । दिशम्, दिशौ, दिशः २ । दिशा, दिग्भ्याम्, दिग्भिः ३ । दिशे, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ४ । दिशः, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ५ । दिशः, दिशोः, दिशाम् ६ । दिशि, दिशोः, दिक्षु ७ ।

(भाषा बनाओ)

भवतेयमुपानत् कियता मूल्येन क्रीता ? तिसृभिर्मुद्राभिः । द्यौः शान्तिः । चतस्रोऽवस्था शरीरस्य वृद्धिर्यौवनं सम्पूर्णता ततः किञ्चित्परिहाणिश्चेति । अद्य स्त्रीसमाजे कासां कासां विदुषीनामबलानां व्याख्यानानि भविष्यन्ति ? श्रीमत्याः सरलादेव्याः सावित्रीदेव्याः प्रियंवदायाश्च । वाचमुवाच

कौत्सः । अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति । चतसृषु दिक्षु परिभ्रम्य समागतोऽहम् । आभ्यो बालिकाभ्य इमानि फलानि ददानि?

(संस्कृत बनाओ)

आपने यह जूता कितने मूल्य में लिया है ? तीन रुपये में। हे परमात्मन् ! आकाश शान्तिमय हो । देह की चार दशा होती हैं वृद्धि, यौवन, सम्पूर्णता और चतुर्थी ह्रास-युक्त । आज महिला परिषद् में किन २ विदुषी स्त्रियों के व्याख्यान होंगे ? श्रीमती सरलादेवी सावित्रीदेवी और प्रियंवदाजी के। जलसे शरीर के अवयव शुद्ध होते हैं । चारों दिशाओं में घूमकर आया हूँ । इन लड़कियों के लिये इन फलों को दे दूँ ।

(शान्तो दृश् शब्दः) देखना ।

दृक्-ग्, दृशौ, दृशः १ । दृशम्, दृशौ, दृशः २ । दृशा, दृग्भ्याम्, दृग्भिः ३ । दृशे, दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः ४ । दृशः, दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः ५ । दृशः, दृशोः, दृशाम् ६ । दृशि, दृशोः, दृक्षु।

(षान्तस्त्विष् शब्दः) प्रकाश ।

त्विट्-ड त्विषौ, त्विषः १ । त्विषम्, त्विषौ, त्विषः २ । त्विषा, त्विड्भ्याम्, त्विड्भिः ३ । त्विषे, त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः ४ । त्विषः, त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः ५ । त्विषः त्विषोः, त्विषाम् ६ । त्विषि, त्विषोः, त्विट्सु-त्विट्त्सु ७।

[षान्तः सजुष् शब्दः] साथ अर्थ में प्रयुक्त, प्रीतिकर्ता ।

सजूः, सजुषौ, सजुषः १ । सजुषम्, सजुषौ, सजुषः २ सजुषा, सजूर्भ्याम्, सजूर्भिः ३। सजुषे, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः ४। सजुषः, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः ५। सजुषः, सजुषोः, सजूषाम् ६। सजुषि, सजुषोः सजूःषु–ष्षु ७। एवमाशीः ।

[सान्तोऽदस्शब्दः] वह ।

असौ, अमू, अमूः १। अमूम्, अमू, अमूः २। अमुया अमूभ्याम्, अमूभिः ३। अमूष्यै, अमूभ्याम्, अमूभ्यः ४। अमुष्याः, अमूभ्याम्, अमूभ्यः ५। अमुष्याः, अमुयोः, अमूषाम् ६। अमुष्याम्, अमुयोः, अमूषु ७ ॥

इति हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्।

सुहृदयः = दयालु । प्रवणः = झुका हुआ, नम्र । चतुष्पथः = चौराहा । धावल्यम् = सफ़ेदी। अधीरः = भीरु। कचङ्कारम् = क्यों । अङ्कः = गोद । साधुवादः = मुबारिकवादी। शुभसंवादः = खुशख़बरी। क्षुभितः = व्याकुल । हर्षः = खुशी। विषादः = रंज । प्रणिपातः = अदब । प्रकम्पनम् = काँपना । चङ्क्रमणम् = बार २ घूमना । तोलनम् = तोलना । मापनम् = नापना । प्रभातम् = प्रातःकाल, सुबह । प्रवरः = श्रेष्ठ, अच्छा । अट्टहासः = ज़ोरसे हंसना । अट्टालिका = अटारी ।

[भाषा बनाओ ।]

सुहृदयानां मित्राणामुपदेशं हृदि धारयामि । चतुष्पथे सन्ति न वञ्चकास्ते । ददामि साधुवादांस्ते । कीदृशः शुभसंवादः श्रोतुमिच्छामि भो सखे ! हर्षविषादौ कथङ्कारं भवतः । अभूत् स नम्रः प्रणिपातशिक्षया । त्रिषं चङ्क्रमणं रात्रौ । प्रभातं प्रभूतं तमस्तद् गतम् । वचस्तत्र प्रयोक्तव्यम् यत्रोक्तं लभते फलम् । मद्यपानां मांसभक्षकाणां च बुद्धिर्विपरीता भवति अतएव बुद्धिमद्भिराभ्यां दूरं स्थेयम् । जगदीशस्य बालस्य विचित्रा विद्यते कथा । सत्यदेवस्य पुस्तकम् ।

(संस्कृत बनाओ)

मेहरबान मित्रों के उपदेश को हृदय में धारण करता हूँ । वे वञ्चक चौराहे पर नहीं हैं । आपके लिये मुबारिकबादी देता हूं । हे मित्र कैसी खुशखबरी है सुनना चाहता हूं । हर्ष विषाद क्यों होते हैं । प्रणिपात की शिक्षा से वह नम्र हुआ । धैर्य्य से कार्य सिद्ध होता है ।

अथ हलन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरणम् ।

(स्वनडुह् शब्दः) सुन्दर बैल वाला कुल ।

स्वनडुद्-त्, स्वनडुही स्वनड्वांहि १ । स्वनडुद्-त्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि २ ॥*

*यहां से आगे प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के जहाँ केवल रूप लिखे गये हों वहां शेष पुल्लिङ्गवत् समझने चाहिये ।

(वार् शब्दः) जल ।

वाः, वारी, वारि १ । वाः, वारी, वारि २ । वारा, वार्भ्याम्, वार्भिः ३ । वारे, वार्भ्याम्, वार्भ्यः ४ । वारः, वार्भ्याम्, वार्भ्यः ५ । वारः, वारोः, वाराम् ६ । वारि, वारोः, वार्षु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(किम् शब्दः) कौन ।

किम्, के, कानि १ । किम्, के, कानि २ ॥

(इदम् शब्दः) यह ।

इदम्, इमे, इमानि १ । इदम्-एनम्, इमे-एने, इमानि-एनानि २।

(एतद् शब्दः) यह ।

एतत्, एते, एतानि १ । एतत्, एते, एतानि २ ॥

(ब्रह्मन् शब्दः) ईश्वर ।

ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि १। ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि २ ॥

(अहन् शब्दः) दिन ।

अहः, अह्नी-अहनी, अहानि १ । अहः, अह्नी-अहनी अहानि २ । अह्ना, अहोभ्याम्, अहोभिः ३ । अह्ने, अहोभ्याम्, अहोभ्यः ४। अह्नः, अहोभ्याम्, अहोभ्यः ५। अह्नः, अह्नोः अह्नाम् ६ । अह्नि, अह्नोः, अहःसु ७ । स० प्रथमावत् ।

(दण्डिन् शब्दः) दण्डग्रहणकर्त्ता कुल ।

दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि १ । दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि २।

[सुपथिन् शब्दः] सुपथगामी कुल ।

सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि १। सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि २ ।

[ऊर्ज् शब्दः] बली कुल ।

ऊर्क्-ग, ऊर्जी, ऊर्ञ्जि १ । ऊर्क्-ग्, ऊर्जी, ऊर्ञ्जि २ । ऊर्जा, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भिः ३ । ऊर्जे, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः ४ । ऊर्जः, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः ५ । ऊर्जः, ऊर्जोः, ऊर्जाम् ६ । ऊर्जि, ऊर्जोः, ऊर्क्षु ७ । स० प्रथमावत् ।

[तद् शब्दः] वह ।

तत्, ते, तानि १ । तत्, ते, तानि २ ॥

[यद् शब्दः] जो ।

यद्, ये, यानि, १ । यद्, ये, यानि ॥

[शकृत् शब्दः] विष्ठा, मल ।

शकृत्, शकृती, शकृन्ति १ । शकृत्, शकृती, शकृन्ति २ । शकृता, शकृद्भ्याम्, शकृद्भिः ३ । शकृते, शकृद्भ्याम्, शकृद्भ्यः ४ । शकृतः, शकृद्भ्याम्, शकृद्भ्यः ५। शकृतः, शकृतोः, शकृताम् ६ । शकृति, शकृतोः, शकृत्सु ७। स० प्रथमावत् ।

[ददत् शब्दः] देता हुआ कुल ।

ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति १ । ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति २ ॥

[तुदत् शब्दः] पीड़ा देता हुआ कुल ।

तुदत्-द्, तुदन्ती-तुदती, तुदन्ति १ । तुदत्-द् तुद-

न्ती-तुदती, तुदन्ति २ । शेषरूप शकृत्, शब्द के समान।

(भात् शब्दः) प्रकाश ।

भात्-द्, भाती-भान्ती, भान्ति १ । भात्-द्, भान्ती-भाती, भान्ति २ । शेषरूप तुदत् पुंवत् ।

(पचत् शब्दः) पकाता हुआ कुल ।

पचत्, पचन्ती, पचन्ति १ । पचत्, पचन्ती, पचन्ति २ ।

(दीव्यत् शब्दः) खेलता हुआ कुल ।

दीव्यत्-द्, दीव्यन्ती, दीव्यन्ति १ । दीव्यत्-द् दीव्यन्ती, दीव्यन्ति २ । शेषरूप तुदत् वत् ।

(धनुष् शब्दः) चाप ।

धनुः, धनुषी, धनूंषि १ । धनुः धनुषी, धनूंषि २ । धनुषा, धनुर्भ्याम्, धनुर्भिः ३ । धनुषे, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः ४ धनुषः, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः ५। धनुषः, धनुषोः, धनुषाम् ६ धनुषि, धनुषोः, धनुःषु-धनुष्षु ७ । स० प्रथमावत् ॥

इसी प्रकार चक्षुष् (आंख) हविष् (होम की सामग्री) पयस् (जल, दूध) ओकस् (स्थान) शब्दों के रूप होते हैं।

(सुपुंस् शब्दः) श्रेष्ठ पुरुषों का कुल ।

सुपम्, सुपुंसी, सुपुमांसि १ । सुपुम्, सुपुंसी, सुपुमांसि २। सुपुंसा, सुपुम्भ्याम्, सुपुम्भिः ३ । सुपुंसे, सुपुम्भ्याम्, सुपुम्भ्यः ४ । सुपुंसः, सुपुम्भ्याम्, सुपुम्भ्यः ५। सुपुंसः, सुपुंसोः, सुपुंसाम् ६। सुपुंसि, सुपुंसोः, सुपुंसु ।

(अदस् शब्दः) वह

अदः, अमू, अमूनि १। अदः, अमू, अमूनि २।

॥ इति हलन्तनपुंसकलिङ्गाः शब्दाः समाप्ताः ॥

याचनम् = मांगना। नर्त्तनम् = नांचना। निक्षेपणम् = फेंकना। प्रेषणम् = भेजना। वादनम् = बजाना। शयनम् = सोना। अवलम्बनम् = सहारा। करणम् = करना। भरणम् = भरना। धरणम् = धरना। अध्ययनम् = पढ़ना। अध्यापनम् = पढ़ाना। मानम् = तौलना। दर्शनम् = देखना। निष्क्रमणम् = निकालना। प्रवेशनम् = घुसना। अवगुण्ठनम् = घूँघट। लुण्ठनम् = लेटना। आरोहणम् = चढ़ना। अटाट्या = घूमना।

साधारणोपदेशः (१)

ईश्वरः सर्वव्यापकोऽस्ति। यौष्माकीणानि सर्वाणि कार्याणि सर्वदा पश्यति, तेन किमप्यज्ञातं नास्ति। तद् गृहं शीघ्रं विनश्यति यस्मिन् गृहे सदा कलहो भवति। सज्जना यत्कर्मारभन्ते तन्मध्ये न त्यजन्ति। विपदि धैर्यमेव सहायतां करोति। विद्यासमं नास्ति धनं जगत्याम्। प्रतिवासिभिः सह मेलनं रक्षणीयम्। जनैः समैश्च सह बन्धुवद् वर्त्तितव्यम्, शरीरं पवित्रं रक्षणीयम्। पवित्रैर्बालकैः सह सर्वे जनाः स्नेहं कुर्वन्ति। अधर्मेण यद् धनमर्ज्यते[१] तन्न तिष्ठति। यथाऽऽगच्छति तथैव गच्छति।

---

१ इकट्ठा किया जाता है।

साधारणोपदेशः (२)

कश्चिदपि जीवो न क्लेशनीयः। यथात्मनि सुखदुःखं
भवति तथैव सर्वत्र विज्ञेयम् । यः शुद्धभावेन कार्यं करोति
जगदीश्वरस्तस्य साहाय्यं करोति । परोपकारिणो जनाः
सुखिनो भवन्ति । योऽन्येषां वृद्धिं दृष्ट्वा विषीदति स सर्वदा
दुःखं लभते । यत्कार्यं स्वकीयाऽधिकारे भवेत् तत्सत्यतया
कार्यम् । यो युष्माकं विश्वासं कुर्यात्तेन सह विश्वासघातो-
नहि कर्त्तव्यः । कटुभाषणं कदापि न विधेयम्, कटुवचनं
सायकवद् हृदि क्षतं[२] करोति । दुर्जनानां संगतिः कदापि न
कर्त्तव्या, अनया हानिरेव भवति न तु लाभः । दुर्जनाः
स्वमित्रैः सह विश्वासघातं[३] कुर्वन्ति, अतएव इत्थं भूतेषु
नरेषु विश्वासो न विधेयः । धर्मकार्येषु विघ्ना बाहुल्येन
भवन्ति, अतएव तत्करणे विलम्बो नहि कर्त्तव्यः ।

साधारणोपदेशः (३)

शुभकर्मणां शुभं फलं भवति अशुभकर्मणां चाशुभम् ।
मित्रं स एवास्ति य आपत्काले न विजहाति[४] । शत्रुर्मधुराला
पमपि[५] कुर्यात्तथापि तस्य विश्वासो नहि कार्यः । महतामाज्ञा
सर्वदा मन्तव्या । अनेनैव युष्माकं कल्याणमस्ति । अविचार्य[६]
किञ्चिदपि कार्यं न कार्यम् , नोचेत् पश्चात्पश्चात्तापं करिष्यथ।
असत्यं न भाषणीयम् असत्यभाषिणां[७] कश्चिदपि विश्वास
न करोति । सविद्यस्य[८] नरस्य सर्वत्र प्रतिष्ठा भवति। मूढस्य[९]

---

२ घाव । ३ धोखा देना । ४ छोड़ता है । ५ मीठा बोलना । ६ बिना
विचार के । ७ झूठ बोलनेवालों का । ८ पढ़े लिखे का । ९ मूर्ख की ।

चाऽप्रतिष्ठा भवति । सर्वेषां शुभचिन्तकतायां स्थैर्यं न चाऽशुभचिन्तकतायाम् । मरणान्ते पापपुण्यमन्तरा नान्यत् सत्रा गच्छति । सर्वैः सह मधुरालापेन भाव्यं कटुवचनं केनापि सह नोच्चारणीयम् ।

साधारणोपदेशः (४)

सद्गुणैर्मनुष्याः पूज्यन्ते गुणमन्तरा[१] कस्याप्यादरो न भवति । यथा शुकान् सारिकाश्च[२] जनाः पालयन्ति न तु काकान्[३] । शिक्षाप्रदानि वाक्यानि न रोचन्ते[४] । इदं प्रायक्दृष्टम् । यथा यावत्कटुकं भेषजं न पीयते तावत् ज्वरो न नश्यति । महतां समीपे निवासेन लघवोऽपि[५] महीयन्ते[६] इदं प्रत्यक्षमस्ति यथा लता वृक्षसदृशी वर्धते । उपदेशोहि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये । पयः पानं भुजङ्गानां[७] केवलं विषवर्धनम् । पापकर्माणि कृत्वा कश्चिदपि सुखं न कामयेत[८] स कथं सुखभाग्[९] भवेत् ? । यथा-अर्कवृक्षारोपणेन[१०] किमसौ आम्रो भवितुमर्हति अपितु न ।

साधारणोपदेशः (५)

वेदः सत्यविद्यानां पुस्तकमस्ति तस्य पठनं पाठनं श्रवणं श्रावणं चार्याणां परमधर्मोऽस्ति । सत्यग्रहणकरणे असत्यस्य च परित्यागे सर्वदा सर्वैरुद्यतेन भाव्यम् । सर्वाणि कर्माणि धर्मानुसारेण सत्यमसत्यं च विचार्य कर्त्तव्यानि ।

---

१ बिना । २ मैना । ३ कव्वों को । ४ अच्छे लगते हैं । ५ छोटे । ६ बड़े होजाते हैं । ७ सांपों को । ८ चाहे । ९ सुखी । १० अकौये के पेड़ लगाने से ।

सर्वैः सह प्रीतिपूर्वकं धर्मानुसारेण यथायोग्यं वर्त्तितव्यम् ॥
शिशवः ! प्रभाते उत्थाय प्राणीश्वरस्य ध्यानं कुरुत येन युष्मदर्थं नानाविधानि[1] वस्तूनि विरचितानि[2] । प्रातरुत्थाय यत्कार्यं क्रियते तस्मिन्मनः सम्यग् लगति । यथा पठनं प्रभाते भवति न तथेतरस्मिन् काले संजायते । प्रातःकाले यत् स्मिर्यते न तच्छीघ्रं विस्मिर्यते, बुद्धिश्च विवर्धते ।

साधारणोपदेशः (६)

उपहासो[3] वैरस्य मूलमस्ति, अतएवोपहासः केनापि सह न कर्तव्यः । यदि कश्चिद् युष्माकमुपहासं कुर्यादेवं वैरं च मन्येत तथापि युष्माभिर्नैवं कार्यम्, एवमेव करणेन युष्माकं कल्याणं भविष्यति । यो नरोऽनुपकारे[4] उपकारं[5] करोति स उत्तमः, योऽनुपकारेऽनुपकारं करोति स मध्यमः, यश्चोपकारेऽनुपकारं कुरुतेऽसौ नीचः । मातापित्राचार्याणां ये बालका आज्ञां मन्तारस्त एव सुखंभोक्तारो भवन्ति । अभिवादनशीलस्य[6] नित्यं वृद्धोपसेविनः । चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

साधारणोपदेशः (७)

दुःखे केवलमीश्वर एव साहाय्यं करोति तेनैव अस्मदीयानि शरीराणि मातुरुदरे विरचितानि । तेनैव च सकलानीन्द्रियाणि दत्तानि । यैरिन्द्रियैरूपरसगन्धस्पर्शशब्दादीन विषयान् गृहणीमः । यथा नेत्रेण रूपं पश्यामः

---

[1] बहुत तरह के । [2] बनाये हैं । [3] हंसी ठट्ठा । [4] बुराई में । [5] भलाई को । [6] प्रणामकर्त्ता को ?

जिह्वया रसमास्वादामहे । नासिकया गन्धं जिघ्रामः । त्वचा स्पर्शं विजानीमः । श्रोत्रेण शब्दं शृणुमः । इमानि विश्वानीन्द्रियाणि ज्ञानसाधनानि सन्ति । नेत्रे विकारे सति वयं द्रष्टुमसमर्थाः।सर्वं जगद् ध्वान्तमयं प्रतीयते। रसनायां विकारे जाते सति मधुराम्लवणकटुकषायतिक्तान् रसान विज्ञातुमसमर्थाः । एवमेव सर्वत्र विज्ञेयम् । य इत्थमुपकर्ता किं तस्याज्ञा नहि मन्तव्या ? अपितु अवश्यमेव मन्तव्या स्वप्नेपि न विस्मर्तव्या ।

साधारणोपदेशः (८)

धर्मस्य सार्वभौमाणि कानि लक्षणानि इति जिज्ञासा वर्तते । धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः । धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ १॥ वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः । एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥२॥ इति मनुमहाराजेन धर्मचिह्नानि प्रदर्शितानि । किमेतानि सार्वजनीनानि. उताहो विरुद्धानि । विज्ञानदृष्ट्या तु विश्वजनीनानि परन्त्वन्धपरम्परयाग्रहदोषवृद्ध्या विरुद्धविधया चेदं सकलं प्रतीपं प्रतीयते । वेदविहितानि च यानि कर्माणि सन्ति तानि विश्वजनीनानि न तत्र पक्षपातः कश्चिदपि विद्यते ।

साधारणोपदेशः (९)

अयि भो बालकाः । दया स्वर्गस्य सोपानमस्ति । पीडिताय जीवाय पीडादानं वरं नास्ति । अन्धं पङ्गुम-

ङ्गविहीनं जनं दृष्ट्वा कदापि हास्यं न कार्यम् । न जाने युष्माकं शरीरेऽपीदृशी घटना संघटेत । कस्यापि निन्दा नहि कर्तव्या । कुसङ्गत्या सर्वदा दूरं स्थेयम् । सत्सङ्गत्या स्वीयं जीवनं विवर्तितव्यम् । सदा पवित्रतया वर्तितव्यम् । नित्यं दन्तधावनं स्नानं व्यायामः संध्योपासनं च करणीयम् । मलिनानि वस्त्राणि कदापि नो धारणीयानि । मलिनैर्वस्त्रैरोगोत्पत्तिः संजायते । निवासस्थानं सर्वदा शुद्धं रक्षणीयम् । गृहाणां मलिनत्वेनापि रोगा उत्पद्यन्ते । वर्षाकाले पवित्रताया बाहुल्येन ध्यानं देयम् । कुतोऽस्मिन्नेवर्तौ नानाविधा रोगा उत्पद्यन्ते ॥

साधारणोपदेशः (१०)

मिथ्याभाषणं कदापि न विधेयम् । अनृतवचनेन नरस्यानादरो भवति अतथ्यभाषिणां कश्चिदपि विश्वासं न विदधाति । यदा जनस्य विश्वासं गच्छति तदा स बाहुल्येन दुःखं प्राप्नोति । तथ्यवदनेन कदापि हानिर्न जायते अपितु सर्वदा लाभ एव भवति । सत्यं धर्मस्य मूलं वै । इयं किंवदन्ती प्रसिद्धास्ति । सत्ये दुःखं न विद्यते । यावन्ति वस्तूनि यूयं संसारे लोकध्वे वेत्थ वा वस्तुतस्तेषां सर्वेषां स्वामी रक्षकः केवल ईश्वर एवास्ति । तेन जगदीश्वरेण मनुष्येभ्यः सर्वेभ्योऽधिका बुद्धिर्दत्तास्ति । ईश्वरः शुभकर्मभिः प्रसीदति अशुभकर्मभिश्च नहि प्रसीदति स सर्वत्र विद्यते सर्वेषां च कर्माणि पश्यति । अतएव कदापि पापं नाचरणीयम् ।

साधारणोपदेशः (११)

अयि भो शिशवः, स्वकीयादायादधिको व्ययः कदापि नहि कार्यः। मिथ्याप्रशंसार्थम् ऋणमादाय व्ययकरणं महती मूर्खतास्ति। ऋणकरणं कदापि वरं नास्ति। कुतः ऋणी सर्वदा चिन्तातुरो भवति। यदा प्रतिज्ञाकाले धनं न दीयते तर्हि विश्वासो गच्छति। दुःखं च बाहुल्येन भुज्यते। धर्मशास्त्रेऽपि लिखितमस्ति ऋणिनो नरस्य मुक्तिर्न भवति। अतएव युष्मदर्थमुचितमस्ति, स्वकीयादायादून्यूनव्ययं कुरुत इति। येन सुखपूर्वकं जीवनमतिवाहयत॥

प्रार्थना।

प्रभो! मयि धेहि विज्ञानं तरेयं दुःखसागरतः।
त्वदीयां प्रेम्णा भक्तिं धरेयं शाश्वतं धातः! ॥१॥
विचित्रोनिर्मितः कायो द्विधानि चेन्द्रियाणीति।
यथास्थानं यथाकामं त्वमेव तात! हे दातः! ॥२॥
इमानि पञ्चभूतानि पृथिव्यप्तैजसादीनि।
समानि सर्वतः कृत्वा अहोसृष्टेः सरीसर्त्तः! ॥३॥
विभो मातः पितः भ्रातः सकलसंसारचर्कर्त्तः।
त्वमेव पालक! सोतः! अहोआनन्ददादातः ॥४॥
त्वदीयं शरणमापन्ना मदीयं छिन्धि अघग्रन्थिम्।
भरेयं भावनां शुद्धां जयेयं मानसं ज्ञातः ॥५॥

---*---

छापरखाना पं. जीवारा

दोहा -

९ चन्द्र टरै सूरज टरै टरै न सा
विचार सुनवे सत्ता जूपना
यरा कोटरै न सत्य विचा
मसा जूपनाराँयरानेसत्ताले कहा

[redacted]

अस्मत्प्रकाशितपुस्तकानां सूचीपत्रम् ।